सियार बनाना

सियार की खोपड़ी में अपर का बीज बोकर उसे साफ जल से सींचता रहे जब फल आ जावे तो तोड़कर उसकी माला बना ले" पुरुष को वह माला पहना दिया जायेगा तो उसे सभी लोग सियार के रूप में देखेंगे ।

॥ मोर बनाना ॥

आद्रा नक्षत्र में मोर का सिर लाकर उस पर खूब माटी लपेट का सफेद खलका बीज बोये जब फूल आ जावे तो तोड़कर विष्णुकांता की डोरी में माला बनाकर रख ले जो उस माला को पहने उसे सभी मोर के रूप में देखेंगे ।

मरी हुई चिड़िया को जिलाना

इस खेल में एक पिस्तौल और थोड़ा सा पारा चाहिये ।

॥ तरकीब ॥

पहले एक चिड़िया लाकर उसका डैना बांध दो

और सबको उसे देखने दो वास्ते जब सब लोग देख ले वह जीता है तब उसे टेबिल पर रखे अब पिस्तौल में बारूद भरकर ऊपर से पारे की गोली भर दो। उसके बाद खेल शुरू करो अब सबके सामने उस पक्षी पर फायर करो। तो वह पिस्तौल की आवाज से ही मुर्छित हो जायेगा तब तुम उसको दिखा दो कि मरी चिड़िया फिर से जी उठेगी अगर वह जल्दी होश में नहीं आवे तो उसके सिर आँख पंख पर पानी देना और पानी डालते वक्त कुछ झूठ मूठ मन्त्र पढ़ना व जादू की छड़ी उसके ऊपर घुमाना चाहिये।

जब जब पारे की गोली भरना तब २ पारे के बराबर तूतिया लेकर खरल में रगड़ देने से ही जो जायेगी।

॥ रुमाल का खेल ॥

किसी एक देखने वाले से एक रुमाल मांग ले। और दूसरे एक देखने वाले के हाथ में रुमाल रखके फाड़ दो की महाशय आपने यह क्या किया

रुमाल की बत्ती बना दो और चीनी की रकाबी में रखकर।सुगन्धित लगाने के वास्ते बाहने स्प्रिट डालकर एक बत्ती उस पर गिरने दो जिसमें वह सब टुकड़े जल जाए, जलने के बाद आग बुझाने के बहाने उसके ऊपर।एक दूसरी रकाबी रख दो और आग बुझाने के बाद रकाबी उठा लो, तब दर्शक का रुमाल तह किया मिलेगा। जो रकाबी आग बुझाने के लिए रकाबी के ऊपर रखी जाती है एक रकाबी नहीं है दो रकाबी हैं कारण कि तुम्हारा संगी रुमाल को लेकर तह करके उसमें थोड़ी सी सुगन्ध लगाकर एक रकाबी में रखकर ऊपर से एक दूसरी रकाबी उसके उपर रख दे रकाबी ऐसी मिल जाय जिसमें दूसरी रकाबी मालूम न पड़े अक्सर ऐसी बहुत सी रकाबियां मिलती हैं। अब आग बुझाने के लिये रख दो और उठाते समय एक रकाबी उठा ले उसके नीचे वाली रकाबी में रुमाल वाली रकाबी रह गई और दर्शकों को मालूम हुआ कि पहली रकाबी में रुमाल आ

रुमाल पे गिरते ही रुमाल जलने लगेगी और तुम घबड़ाकर रुमाल की आग बुझाने लगेंगे और इसी अवसर में तुम्हारा एक साथी दूसरी रकाबी उस रकाबी के उपर ढक दें जिससे रकाबी की आग बुझ जाय तब, तुम अपनी मन्त्र की छुरी का रकाबी पे धर कर कहो ॐ ह्रीं ह्रीं यह कहकर रकाबी को प्रथम रकाबी से उठा लो और प्रथम का दर्शक के सामने, ले जाओ जब दर्शक देखेंगे कि रुमाल रकाबी में रक्खा है तब अचम्भा करेंगे यह खेल नीचे लिखे अनुसार करना चाहिये।

ऊपर लिखे खेल करने में केवल चलाकी की आवश्यकता है। जब किसी एक देखने वाले से रुमाल मांगलो और अपने मेज की तरफ जाते हुए फटे रुमाल को दर्शक के रुमाल से बदल लो और किसी दूसरे दर्शक के हाथ में देकर कहो कि महाशय आपने यह क्या किया एक सज्जन का रुमाल फाड़ दिया अथवा आठ

एक भले आदमी के रुमाल को फाड़ दिया। अब किस तरह से इस रुमाल को दे सकूंगा यह कह कर रुमाल ले लो और अपने टेबिल से सुई और तागा लेकर कहो कि महाशय अब इस रुमाल की सिलाई करके नया कर दो। यह,कह किसी देखने वाले से कहो कि महाशय आप रुमाल को सी दीजिये। यह कहकर देखने वाले के हाथ में दे दो, दर्शकों का रुमाल फटा दिखाई पड़ेगा तब तुम कहो कि महाशय अब हम इस रुमाल को किस तरह दे सकेंगे और सिलाई भी किस तरह हो सकेगी परन्तु इस रुमाल में थोड़ी सुगन्धित लगा सकते हैं यह कहकर रुमाल को चीनी की रकबी में रख दे और इसे को सुगन्धित बनाने के बहाने स्पिरिट आफ आवाइन कुछ रुमाल पे फेंक दो और जलती बत्ती को उलटकर रकाबी में फेंक दो दर्शक को मालूम हो जाय कि तुम्हारी असावधानी से रुमाल आग पर गिर गई बत्ती

भाई कोई २ खेल वाले लिखी रीति से खेल करते हैं। जब की रुमाल जलने लगता है तब रकाबी के टेबुल के चोर कोठरी में रख देते हैं और चप्पर मारकर आग बुझा देते हैं।

*** एक ग्लास का धुआं दूसरे ***
*** ग्लास में जाना ***

यह अनोखा खेल शीशे के दो ग्लासों में किया जाता है जिसके ऊपर एक तस्तरी भी होनी चाहिये। दर्शकों के सामने सिगरेट पीकर उसके धुआं को ग्लास में भरकर तस्तरी से बन्द करो। और एक मनुष्य को वह धुआं भरा हुआ ग्लास पकड़ा दो। इसी समय में तुम्हारा दूसरा आदमी ग्लास के अन्दर नमक का तेजाब लगा दे और तश्तरी के तलों में चूना और नौसादर को मिला कर गीला गीला चुपड़े अर्थात् पानी बुझे हुए पतले चुने में थोड़ा नौसादर पाकर तली में मल दे। अब खबरदार रहो कि तेजाब अंगुली में न लगे। इस दवा वाली ग्लास को मशाल लगी हुई तश्तरी

से ढकने पर धुआँ पैदा होने लगेगा। इसकी धुए वाले ग्लास के ढक्कन को उस आदमी से उठव कर धुआं निकलने दे। ग्लास से धुआं निकलता हुआ दूसरे में पैदा होता नजर आयेगा। जब अधिक धुआं हो जावे तो अपना ग्लास भी खोल देना चाहिए कि लोग धुआं को उड़ता देख ले। लोग इन खेल को अचम्भे से देखेंगे। सामान्य से सामान्य खेल को खेलने वाले इस बात को बतलाने की फीस कई रुपये लेते हैं। आप स्वयं लोगों को दिखा सकते हैं। नमक का तेजाब बहुत तेज और खतरनाक वस्तु है। इसी कारण बुद्धिमानी से काम करना चाहिए।

बिना खूँटी के खड़ाऊं पर चलना

सफेद चिरमिटी को पानी में पीसकर खड़ाऊं पर मले और पैर जमाकर खड़ाऊँ पर रख दो कोस तक चले तो भी न गिरे मनुष्य देख कर आश्चर्य करेंगे।

॥ मरी मछली जल में तैरने लगे

मरी मछली को मंगाकर उसमें तेल मिला कर चुपड़े फिर जल में गिरा दे तो मछली जल में तैरे।

॥ चार मूसर लड़े ॥

कग सिंगी का मूल लाये जो रवि दिन।
घर बीच में चार मूसर को लड़ाई॥
चार मूसर आपस में लड़े भिड़े सोई।

॥ चित्र हंसे ॥

बीर बहूटी मन्धक सोने, धरं अग्नि पर खेल।
अथवा बाती जरावे, पुतरी जिया भरमाये॥

॥ मांगे सो पावे ॥

आक धतूर माया सूले जरै लटेरा लावे रे।
तिनको बांटि चूरि आखे पुष्पन क्षत्र जोआनें।
सिर पर डारे जो कोई मांगे सोई पावेरे।

॥ मिट्टी खावे और गुड़ का स्वाद पावे ॥

चिर्मिटी सेतु मंगावे अधिया में जो चबाय॥
फिर बाँकी मिट्टी खावे गुड़ जाने खाये न अघाय।

मुख किस्ती के पास में एक छिद्र रखो। हुक्के
में जल भर दो। जब जल भर चुके तब चुपके से
नाव के छिद्र को खोल दो और दूर जाकर बैठ
जाओ और सबसे कहों कि देखो इसमें कुछ लगा
नहीं है और हेम दूर में हैं किस्ती को हाथ से
छूते भी नहीं, परन्तु जब हम हुक्म देंगे तब हुक्के
का जल गिरेगा और जब इसे बन्द होने को कहेंगे
तब बन्द हो जाएगा इसी प्रकार दो चार बाते कहो
झूठे मन्त्र पढ़ो तथा कहो कि चलो प्याला भरदो
यह कहकर एक छोटा सा प्याला हुक्के के ऊपर
नल के नीचे रखे क्रमसे प्याला भर जायेगा दर्शक
गण भी आनन्दित होकर वाह २ करने लगेंगे :-
हुक्का मुख और कुच खोल दो जब किस्ती का
जल निकल कर हुक्के के नीचे का मुख जल से
बन्द होने लगे तब तुम हुक्के के जल को गिरने
की आज्ञा दो हुक्के से जल गिरेगा और जब हुक्कें

॥ गड़ा धन देखे ॥

जहां गड़ा धन जानिये मटुका एक मंगवाय ।
गेहूं भरकर गाड़िये सात दिवस हो जाय ॥
तब उखाड़ देखे उन्हें गेहूं सब भर जाय ।
तो निश्चय ही जानिये गड़ा माल तहं पाय ॥

॥ सर्व कामना पूर्ण विधि ॥

कोई हाड़ पीठ की लावे ।
पांव के माथे तिलक लगावे ।
अष्टोत्तर मंत्र जो जपियो ।
सर्व कामदा पूर्ण रखियो ।
तिलक देख राजा वश होवे ।
गुप्त मनोरथ पूरन होवे ॥

॥ ऋद्धि सिद्धि ॥

भरणी भादो मास की कृष्णपक्ष में होय ।
गाने चौटक कीजिये जानत हैं सब कोय ॥
चार कलस भर धरे एकान्त घर माहिं ॥
एकान्त धरिये तिसे, वठि उठि पूजे ताहि ॥
दूसरे दिन जो देखिये सिद्धि होय सो लाभ ।

अन्नपूर्णा हो खुशी जब मांगे धन धाम।
सो सब देगी पूर्ण वह निश्चय मन में जान।

* हुक्की से जल की धारा *

इस कौतुक को साधारण बाजीगरी कहते हैं। प्रयः सब किसी ने देखा होगा कि लकड़ी की किश्ती व नारियल के हुक्के से दिखलाते हैं। इस कौतुक को देखकर प्रायः सभी देखने वाले खुश होते हैं। और ताज्जुब सा मानते हैं। और बाजीगर भी प्रायः मोहित करते हैं।

* तमाशा करने की विधि *

एक लकड़ी की किस्ती बनाओ जो एक हाथ लम्बी आधी हाथ चौड़ी व तीन इन्च गहरी हो किसी लकड़ी अथवा धातु की बनने से कम होगी और उसी किस्ती के बीच में एक दो अंगुल चौड़ी लकड़ी लगा दो जिसमें एक सुराख हो उसमें हुक्के से किस्ती का मुख मिला हुआ हो और वह सुराख किश्ती के नीचे तक आ जाय और बीचो बीच रहे व नाक

से गिर कर फिर हुक्केका मुख डूब जाय तब हुक्के से गिरना मना करो तब बन्द हो जाएगा। इस तरह के कौशल करके मोहित करो।

दीपक की लौ आपस में लड़े

एक दीपक में भेड़िये की चर्बी व दूसरे में बकरी की चर्बी और राम बांस की रुई की बत्ती दोनों दीपक में डाले। एक दीपक को दक्षिण में दूसरे दीपक को उत्तर की तरफ जला दें तो दीपक की लवें आपस में जब एक दीपक को बुझाकर दूसरे को बुझाना चाहोगे तो दूसरा दीपक अपने आप बुझ जायेगा और लोग देखकर हंसेगे।

पानी से दीपक जले

खिरनी के दूध में रुई को भिगो कर छाया में सुखा ले और शतावर बांटकर बत्ती बनावे और दीपक में जल भर दे फिर उस को जला दो तो जला करेगी और आदमी देख कर अत्यन्त अचम्भित होंगे।

*** पानी पर मृगछाला तैरे ***

लिसोढ़े लाकर उसका गुदा काढ़े को मृगछाला पर आठ बार गुदा का लेप करो और मृगछाला को नदी में बिछावे और उस पर आसन बाँधकर बैठो भगवान का ध्यान करे तो कभी न डूबे।

॥ पेट में नाज बोले ॥

मंगलवार रविवार के दिन चकोर पक्षी (नर) को हाड़ी में बन्द करके उत्तर की तरफ किसी खेत में उस हड़िया को दबाये फिर जो कोई उस खेत के नाज को जबरदस्ती कर चोरी से खायेगा तो उसके पेटमें नाज बोलने लगेगा। और आदमी देखकर लोट पोट हो जायेगा।

॥ पृथ्वी में गड़ा धन जाने ॥

जहां पृथ्वी को खोदिए बास कमल की आय।
तहाँ गड़ा धन जानिये खोद काढ़िये ताहि॥

॥ दूसरी विधि ॥

जहाँ काग मैथुन करे बैठे सिंह तहं आय।
निश्चय ऐसी ठौर में हैं धन गाड़ बताय॥

तीसरी विधि

जहाँ ज्येष्ठ आषाढ़ में रुखन पर पत्र आय।
अन्य किसी ऋतु में नहीं बात दृष्टि में पाय ॥
तहं गढ़ा धन जानि के मन लावे विश्वास।
इन्द्रजाल विद्या कहते हैं करे परीक्षा तास ॥
आपस पास जिहि ठौर के जल का चिन्ह न होय
आय अग्नि बारे वहां प्रगट कभी न होय
तो निश्चय यह जानिए वहां गड़ा धन होय।
जहाँ भान तपता रहें तहीं रहे नित घास
चौपाए खाए रहे घटा न देखे ताहि
नित काटे नित उपजे नित नवीन तरु होय।
तह पृथ्वी के पेट में धन निश्चय कर होय।

खर्च हुआ धन फिर आ जाये

रवि दिन में यत्न करे जो कोय।
मैथुन करते मेंढक पावे।
नर मादा दोउन को लावे ॥
प्रथम गुगुल की धूनी देवे।

वगैरह हो वहाँ गाड़ देवे तो आठ दिन में बड़े २ बिच्छू पैदा हो।

॥ शीशा चवाना ॥

मसालची जब मशाल जलावे तो शीशा मशाल में धरा देवे। जब शीशा लाल अग्नि के समान हो जाय तो उसे अदरख के रसमें रखे, फिर जो कोई चबाये तो जरा भी घाव न लगे।

॥ चूल्हा बांधने का उपाय ॥

अंजीर का लकड़ी मेंढक की चर्बी जमाकर चूल्हे में गाड़ दे तो जब तक लकड़ी न निकलेगी तब तक चूल्हा न जलेगा।

॥ जल में पत्थर तैरे ॥

ससी सियार की विष्ठा और भड़बेर की गुठली लाकर इन सबको पीस कर पत्थर पर लेप कर दे जब सूख जाय तो जल में पत्थर रख दे तो अपने आप पत्थर तैरने लगेगा।

॥ बिना आग ज्वार भुने ॥

थूहर के दूध में ज्वार को भिगोकर छाया में

देह तर्जनी शिर लगाय सूर्य दिखावे।
वैरी घर्षण करे तो आन जलावे॥

कोल्हू रोकने का उपाय

साबुन इक मंगाय स्याही लगाय कोल्हू के अन्दर डाले तो कोल्हू चलने से रुक जायेगी।

॥पानी में आग पैदा हो।

गन्धक और नौसादर दोनों की एक पोटली बनावे फिर यदि उस पर पानी डालकर मले तो अग्नि पैदा हो।

चलनी में पानी न छने

चलनी में घीक्वार के पत्ते का रस मले और ढक कर छाया में सुखाय फिर उसमें जल भरे तो पानी कभी न छनेगा।

॥ बिच्छू पैदा हो॥

एक मिट्टी का वर्तन लाकर उसमें भैंस का गोबर भरे और उसके ऊपर से गधे का मूत्र डाले बढ़ी बुरादाभी भरे। इस सबको वर्तन में भर जहाँ कूड़ा

बहुरि यतन ऐसा कर देवे।
नर मुख झांक रुपया देवे ॥
नारी के मुख की थुली लावे।
फिर दोउन को टीका कीजै ॥
जहा ताल होय वहाँ जावे।
दोउन को वह ले जावे।
नर को पूरब तरफ गाड़िये ॥
मादा पश्चिम जाय गाड़िये।

अटूट भण्डार

जहाँ पर होय जहर होरी जारिवे की।
जहां करे यह विधि गुप्त है करिवे की।
प्रथम घृत और तेल तिली गेहूँ मंगावे।
चौड़ी ज्वार मंगाय और इक पैसा लावै ॥
हार गाड़े यहां नावन को गाड़ धरावै।
जैसी होरी जानिए यह तन्त्र कहावै।
खर्च करे बहुभांति घटेगी कोउ नाहि।
विधि में चुके नहीं सत्य मानो मन माहि।

सुखाये फिर कुछ देर धूप या छाया में धर दे और फिर कपड़ा में डाले तो अपने आप भुन जाय।

॥ मालिन की डलिया उछले ॥

भादो या कुवार में मंगल या इतवार के दिन में मैना लावे और उसके मुंह में मिट्टी भरकर गाड़े जब उसके ऊपर। वर्षा पड़े तो सात दाने उड़द के उसके मुखमें भर दे, जब उससे वृक्ष उत्पन्न होवे और फल लगे तब उस फल को निकाले फिर उसमें के सात दाने जिस मालिन के डलिया में डाले तो डलिया के फूल उछल पड़े।

॥ घर में भूत दिखे ॥

घोड़े की ताजी विष्ठा को रूई के बत्ती में लपेट तिल के तेल में रखकर जगावे तो भूत ही भूत दिखाई दे।

॥ मनुष्य पानी पर चले ॥

पुष्य नक्षत्र रविवार के दिन आम की लकड़ी काटकर लावे और उसके खड़ाऊं को पहन कर मनुष्य जल ऊपर चले तो दर्शक बहुत प्रसन्न होंगे।

॥ चांदनी न जले ॥

चिनियाँ कपूर और हल्दी, पान का रस इन सबको एकत्र कर गोटिया बनवा और गोली रखे फिर चांदनी में आग लगा दे तो कभी भी चांदनी न जलेगी।

॥ पानी दूध सा दिखे ॥

अरण्ड की गिरि निकाल कर पानी में पीस कर रख हिलाये तो दूध सा दीखने लगे।

॥ दिन में तारे दिखे ॥

सफेद सुर को पीसकर अगस्त के फूलों के रस में ७ दिन रखकर उसे आँखो में लगाये तो दिन में तारे दिखे।

॥ हथेली पर सरसों जमे ॥

दूध के रस को सरसो में भिजाकर चार पहर छाया में सुखाये फिर जल का छींटा देकर मिट्टी के साथ हथेली पर दे तो सरसो हथेली पर जमे।

॥ भैरव पकड़ने की विधि ॥

जाग आवस्या रात्रि नौज वीर्य किनारे।
ताहि सुखाय पिसाय के कहीं धरे किनारे॥
आमावस आय जब आंखन में लगावे।

जहां चरे भेंड़ बकरिया सन्ध्या समय आवे।
भैरव बकरे पर सवार तब दृष्टि आवे।।
ताकि टोपी उतार निज घर में लावे।

॥ भैरव पकड़ने की दूसरी विधि ॥

भैरव तेरे पास जायके माँगे टोपी।
जब लौ टोपी रखे पास वह तेरे।।
कहे उसको जो काम तुरत करलाये घनेरे।
तीन वचन की देय विधि अपार बताऊं।।

॥ सभा कानी देखना ॥

वृक्ष आंवले के ऊपर जो नीम लेशा कहूँ पावे।
ले आये फल फूल मूल मे ताको छांह सुखावे।।
पीस कूटकर चूरण कीजे बाती एक बनावे।
लाय धरे दिया के मोहि तेल नीमको डाले लौ।
जो उपर जड़ बजाला कानी सभा दिखावे जल्दी
बन्द करो दिया को ज्यों की त्यों बतावे।

॥ सोचे हुये मन की बात कहे ॥

घुग्घु को काढ़ कलेजा अग्नि धरावे।
गुग्गुल धूनी देय मन्त्र लौ सिद्ध करावे॥

फिरे जो सोता हो सोहिके उन सारे।
कहे वो मन के भेद आपने मुखसे सारे॥

हवा से आग पैदा होना

ऊँटनी की मेमनी को जलाकर शहद में बुझा ले और सुखा ले जब अग्नि उत्पन्न करने की जरूरत हो, तो मेमनी को तोड़कर हवा में रख दो आग पैदा हो जायेगी।

बाल दूर करने की विधि

आधा भाग चूना लेवे एक भाग हरताल मिलावे।
दोऊ मिलाय जल ले, हाथ और बालों पर लगावे॥
है निरोग यत्न यह कीजै, मनमें अति सुख पावे।
बार बार मुण्डन ते छूटे वे इन्द्र मायिका यो गावे॥

॥ कपड़े की ओट में निशान लगाने की॥

सुराख नाधि पारा भरे, गोली डारे मांहि।
पौर करै पांछी मरे, कपड़े दाग ना काहि॥

॥ भूख नहीं लगे॥

सुन्दर खीर पकाय के आँगा लेय चबाय।

गूलर घूली खाय के, सूत करे चिल्लाय ॥
फिर हांड़ी मुख बन्द करि, चना पीस लगाय ।
अथवा गुड़ चना हाथे, हांड़ी मुख पर लाय ॥
भीतर जल में जा गाड़िये पाताल खुदवाय ॥
जितने दिन का शर्त हो, भूख न लागे ताय ।
बीच ही मिलाय के खीर काढ़ि के खाय ॥

हथेली पर राख मलने से अच्छर दीखे

दूध टमाटर लाइकर राखे, नजर बचाय हाथ पर लिखे
भरी सभा में दिखावे राख मले अक्षर पर ठेल ॥
प्रगट दिखादे सांचा खेल पहले निज माथ दिखावे
तब तो ऐसा तमाशा दिखावे

नीबू उछलने लगे

नीबू में से, रस निकाल कर उसमें पारा भर सुराख को मोम से बन्द कर चैत बैशाख की धूप में रखे तो वह उछलेगा ।

...सा शराब डाल दे तो दूध की तरह हो जाय।

लैम्प पर चिमनी न चिटके

एक बर्तन में ठंडा पानी भरकर उसमें चिमनी डाल दे और उस बर्तन को चूल्हे पर रखकर अग्नि बारे। जब पानी उबालने लगे तब उतार ले अपने आप ठंडा होने दे। वह-चिमनी लेम्प पर चढ़ाने से कभी न चिटकेगी।

रूमाल कर दूसरा खेल

यह खेल आदमियों को बहुत पसन्द है और देखने पर लोग बड़े खुश होते हैं इस प्रकार खेलकर इस खेल में रूमाल से १२ रूमाल निकलते हैं। इस खेल के करने के पहले दोनों हाथ में कोट के आस्तीन में चार २ रुमाल, लम्बे-लम्बे रखो जब खेल करना हो तब एक बड़ा रूमाल लोगों को दिखा दो। फिर उसका दोनों कोना पकड़ कर उठाओ और हिलाओ हिलाते में एक एक कर आस्तीन से रूमाल निकालते जाओ खेल की सफ़ाई

कुञ्जी विना ताला खुले

रवि दिन दोपहर समय में नंगा होकर आय ...हुति जरावे अग्नि में लावे राख उठाय। मुंह कुल्फ ...र मारिये कुँजी खुल जाय।

॥ मिट्टी खाने से मीठा लगे ॥

प्रथम गुंजा के पत्ता लाकर चाभे फिर अन्धेरी ...त में माटी खाये तो गुड़ की तरह मीठा लगे।

॥ भूत उतारने का उपाय ॥

घुग्घू का मांस सुखाकर रखे, फिर उनकी ...ी दे तो प्रेत भाग जाय।

दीपक में जवाहरात

काले सांप की चर्बी लगाकर दिये में जलावे जवाहरात दिखाई दे।

॥ मनुष्य बन्दर दिखे ॥

सफेद चिरमिटी और काली माटी मरे हुये ...के मुंह में भरकर गाड़ दे और जल से सींचा ...र फल लगे तो रविवार के दिन तोड़ लावे

की मिट्टी ले सानकर मिलाओ और उस मिट्टी का बन्दर बनाओ और सफेद गोरेन्दे वृक्ष की लकड़ी लेकर मन्त्र पढ़ २ कर बन्दर पर फेंकते जाओ जब बन्दर लाल हो तो जानो कि मन्त्र सिद्धि हुआ अब तुम जिस पुरुष या स्त्री को बन्दर बनाना चाहो वही लकड़ी उसके माथे पर फेर दोगे बन्दर बन जायेगा। सत्य वचन है।

॥ आदमी से तोता बनाने का मन्त्र ॥

ॐ अहतः काला कर हरा लाल पीला चोंच बना जा ॐ फट्-फट स्वाहा। सावा लाख मन्त्र आधी रात को जपे। जब सिद्धि हो जाय आपही आप किसी एक मनुष्य पर परिक्षा करो कि जब वह लाल पीला मनुष्य पड़ जाय तो जानो सिद्ध हो गया है।

कुँवारी कन्या के हाथ से डोरा कतवा कर उसका गंडा बनावे जिस मनुष्य या औरत के गले में पिन्हा दोगे फौरन तोता बन जायेगा।

पहले २१ रोज तक मन्त्र को कण्ठ कर लो स्त्री गमन, झूठ बोलना, नशा चारपाई पर

जब तमाशा दिखाना चाहे तो उसकी माला बना कर मनुष्य के गले में डाल दे तो मनुष्य बन्दर दिखाई दे और लोग देखकर आश्चर्य चकित होंगे।

लाल फूल सफेद हों जाय

लाल कनेर हुर हुर को फूल को लोनियां गंधक का धुआं दिखलावे ते फूल सफेद हो जाय।

* फूल सफेद होने पर फिर लाल हो जाय *

लाल कनेर या हुर हुर के फूल को लोनियां गन्धक बताशे की धूली से सादा हुआ फूल लाल हो जाय।

॥ जले हुये डोरे में अंगूठी लटकाना ॥

डोरा नमक के पानी में भिगोकर सुखाले उस में हल्की अंगूठी बांधकर लटका दे फिर दियासलाई लगा दे तो सब डोर जल जायेगा और अंगूठी कभी न गिरेगी।

॥ शराब को दूध करना ॥

आम के बौर को सुखाकर पीस लो और थोड़ा

सोना दूसरे का अन्न खाना, चोरी करना, दगा-बाजी करना, जूता पहिनना सिर पर घृत डाल २४ रोज तक खाओ खाट पर न सोवो माला हरे रंग का हो उसी पर सवा लाख मन्त्र जपना।

॥ गर्भ धारण विधि यन्त्र ॥

इस गर्भ क्रिया से स्त्री को गर्भ रह आयेगा। बहुत सुन्दर बलवान लड़का पैदा होगा मन्त्र यहां से प्रारम्भ करें।

प्रेम मगन कौशिल्या निशिदिन जानय आन।
सुन सनेह बन माता बसल चरित्र कर गान॥

इस पर पूरा करके समाप्त करें।

गर्भ धारण यन्त्र



इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् …जन सहित अष्टगंध से पूजन करके नौ हाथ

सूत जिस स्त्री को पहनना हो उसी के हाथ से नाप कर नौ गांठ देकर गले में बांधे अवश्य गर्भ धारण हो।

इन्द्रजालिक प्रसंग की तरकीब

यह तमाशा अगर होशियारी के साथ दिखाया जाय तो सब देखने वाले आश्चर्यचकित और खुश होंगे।

तमाशा करने की तरकीब

एक कपड़ा ले उसकी पीठ पर गोंद से सूत लपेट कर सुखा लो फिर उसको काटकर छोटी २ दो तितली बनाओ और उसकी छाती पर नीचे की ओर दो लाल काला रेशम का धागा मोम से लगाकर अपनी छाती के कपड़ों से चिपका लो और दोनों तितलियों को बांये हाथ बिठाकर पर दाहिने हाथ में कागज का मोड़ा हुआ पंख देकर खोलो और देखने वालों से कहो कि यह तितली आपसे आप उड़ेगी। बस पंख में हवा करो तो एक बार उड़ने लगेगी।

पानी न गिरे

पहले तमाशा करने वाले को अपनी तमाशे वाली पोशाक से युक्त पाकिट में एक कांच का टुकड़ा ऐसा रखना चाहिये कि वाले ग्लास के मुंह पर ठीक २ बैठ जावे फिर जब तमाशा करना हो तो एक कांच का गिलास जिसके मुंह पर ठीक बैठने वाला ढक्कन रखकर कहो कि जल भरागिलास अभी उलटने से गिर जायगा लेकिन हमारे हुक्मका डर लगेगा तो नहीं गिरेगा। इतना कहने के बाद धीरे से कांच का टुकड़ा दाहिने हाथ की हथेली में लेलो दाहिने हाथ की हथेली से ग्लास का मुंह बन्द करने के बहाने झट कांच का ढक्कन के मुंह में लगा दो और दाहिने हाथ से मुंह दबाकर बांये हाथ से पेन्दी उलट फिर कुछ देर तक वैसे ही पकड़े रहने के बाद दाहिने हाथ को हटा दो तो पानी नहीं गिरेगा फिर पट सीधा करने के बहाने दाहिने हथेली में ले लो और जेब में रखकर उलटो तो पानी गिरने लगेगा। यह खेल

बोल करके विष्णु रज भाँग का बीज बो दें। जब पेड़ फूल कर पक जाय तो उसका पत्ता उतार कर दो दो काली मिर्च के साथ पीसकर जिसे खिला देवे तो चारो तरफ भैंसे ही भैंसे दिखाई देंगे।

॥ कुत्ता बनाना ॥

रविवार हस्त नक्षत्र में काले कुत्ते का सिर लेकर उसमें मिट्टी भर कर उसमें काले तिल का बीज बो दे, जब फूल लग कर तैयार हो जाय तो उसका फल तोड़कर उसकी माला बना डाले। यह माला जिस मनुष्य को पहनाया जायेगा वह कुत्ते के रूप में दिखाई देगा।

॥ घोड़ा बनाना ॥

कृष्ण पक्ष की चौथ या चतुर्दशी को जब पुष्य नक्षत्र हो तब घोड़े का सिर लाकर उसमें श्वेत गुँजा का बीज बो दे जब पेड़ बड़ा होकर उसमें फूल आ जाये तो उन फूलों को घिसकर जो मनुष्य आंजन लगायेगा उसे सभी लोग घोड़े

एक आदमी का सिर आराम से चला जाय उसमें मेज के छिद्र के बराबर एक ढकना भी हो कि देखने वाला न जान सके। यह एक कब्जे से फिट करना चाहिए जो नीचे से खुल सके।

बिल्ली बनाना

शुक्रवार को कृष्ण चतुर्दशी को स्वाती नक्षत्र में बिल्ली का सिर लेकर उसकी आंख निकाल कर उसमें सेंधा नमक लगाकर एक मास तक रख दे, जब सूर्य ग्रहण पड़ तब दोपहर को उसमें काली मिट्टी भर कर अरण्ड का बीज बोवे और साफ पानी से सींचा करे जब उसमें फल लग जाय तो उन्हे तोड़कर तेल निकाल कर उस तेल में बत्ती जलाकर जिसके घर में जलावे उसमें बिल्लियां दिखाई पड़ेगी।

।। भैंसा बनाना ।।

लड़ाई के मैंदान में जो भैंसा मारा जाय उसे उसका सिर लाके रविवार आद्रा नक्षत्र में

देख लोग आश्चर्य करेंगे अचम्भित होंगे ।

॥ कागज की कड़ाही आग पर चढ़े ॥

फिटकरी कपूर पीसकर कागज पर लेप करे और उसे कागज की कड़ाही बनाकर उसको अग्नि पर चढ़ावे और उसपर जो तबियत आवे सो बनाये वह जलेगा ,नहीं ।

॥ नीबू से रक्त निकलना ॥

कटहल का अर्क छूरी पर लगाकर सुखा लो फिर उससे नीबू तरासे तो उसका अर्क रक्त जैस हो

॥ कटा सिर बातें करे ॥

यह विचित्र खेल विलायत से प्रचलित हुआ इसको देखकर लोग आश्चर्य चकित हो जाते है ।

॥ खेल का तरीका ॥

प्रथम एक कठोरी में एक रंग के दो परदे टाँग दो और जमीन पर भी उसी कपड़ा का रंग बिछादे फिर निम्नलिखित मेज बीज में रख दे जिसमें जिसमें एक गोल छिद्र भी होना चाहिये जिसमें

के रूप में दिखाई देंगे

॥ मेंढक का खेल ॥

मेंढक को ले शराब में डाल देने से फौरन मर जाता है, फिर उसे निकाल कर पानी डाल देने से तुरत जी उठता है।

॥ साँप काटने पर ॥

मेंढक का कलेजा जहा सांप काटा हो वहां पर बांध देने से तुरन्त आराम हो जाता है।

* पानी उबलना बन्द हो *

आग पर रखी हुई पानी की खौलती डेग के ऊपर अगर मेंढक रख दिया जाय तो तुरन्त उब-लना बन्द हो जायेगा।

* चोर से चोरी बात कहलाना *

जिस स्त्री या पुरुष के ऊपर चोरी का सुबहा हो उसे मेंढक की जीभ में आटे मिलाकर रोटी के पकाकर खिलावे तो तुरन्त साफ २ कह देगा

* दिल की बात कहलाना *

जिस औरत के दिल की बात कहलानी हो तो बकरी के दूध में कबूतर का पंख जलाकर पिला दो तो मन की बात कहने लगेगी।

॥ सरदी से बचे।

सर्दी से बचने में मेढक का खून निकाल कर शरीर में लेप करने पर सर्दी का असर नहीं होता

॥ मेढक पैदा करना ॥

नवमी रविवार के दिन जरद रंग का मेढक लेकर उसकी पेसानी में दही लगाकर गूलर की धुनी देकर हाड़ी में रखकर सुखा ले। जब कहीं दिखाना हो थोड़ा सा उसी का चूरन लेकर पानी में डाल तो तमाम मेढक हो जायेंगे।

॥ अग्नि से शरीर न जले ॥

मेढक की चर्बी निकाल घी क्वार के रस में मिलाकर शरीर में मर्दन कर अग्नि में कूद जाय तो शरीर न जले।

[दूसरी विधि]

आक (मदार) का दूध घी क्वार के रस में मिलाकर शरीर में लेप कर अग्नि में प्रवेश करे तो शरीर न जले।

(तीसरी विधि

घी क्वार की जड़ तथा केले की जड़ दोनों महीन पीसकर शरीर में लेप करके अग्नि में चला जाय तो अग्नि से शरीर न जले।

(चौथी विधि)

घी क्वार का रस केला का रस आक (मदार) का रस निकाल कर देह में मर्दन करने से देह अग्नि में न जले।

(पांचवीं विधि)

काली मेढ़क की चर्वी लगा कर बदन में लेप करने से अग्नि में नहीं जले।

अग्नि में मुंह न जले

घी और शक्कर मिलाकर शर्बत बनाकर बदन में

लेप कर उपर से नागर मोथा चबाकर आंब के अंगारे को मुंह में रख ले तो मुंह न जले।

(छटवीं विधि)

सोंठ काली मिर्च तथा पीपर बराबर बराबर लेकर पीसले ओर मुंह में रख ले तो मुंह न जले यानि अंगारे को मुंह में रख लो तो मुंह न जलेगा।

आग पैद हो

ऊंट की मेंगनी को लेकर आग में लाल करके शराब में बुझा ले जब आग पैदा करना हो तो ज्येष्ठ की गर्मी में दोपहर के समय उसे धूप में रख तो अपने आप जल उठेगा।

रूमाल में आग लगाना

खूब बढ़िया रेशमी रूमाल लेकर स्प्रिट में तर करके छाया में सुखा ले, तब उसे आग लगाकर इतनी फुर्ती से बुझावे कि जब तक स्प्रिट का असर रहे रूमाल नहीं जलेगा। देखने वाले आश्चर्य करेंगे।

अग्नि से हाथ न जले

पहले नौसादर और कपूर को लेकर पानी में घिस कर हाथों के ऊपर लगावे। तत्पश्चात् आग उठा हाथ पर रखे तो कदापि हाथ न जलेगा।

॥ दो दीपकों की लौ आपस में लड़े ॥

एक दीपक में भेड़िये की चर्बी और दूसरे में बकरे की चर्बी भरे व उसमें रामबास की रुई की बत्ती बनाकर डाल दे जब प्रकाश करना हो तो एक दीपक को उत्तर दीशा तथा दूसरे को दक्षिण दिशा में रखके जला दे तो दोनों दीपक की लपट आपस में लड़ेगी। जब एक दीपक को बुझाकर दूसरे को बुझाने लगेंगे तो बुझा दीपक फिर जल उठेगा अगर बुझाना हो तो दोनों एक साथ बुझावे तो दोनों बुझ जायेगा। देखने वाले आश्चर्य से देखेंगे।

दिन में तारे दिखने लगे

प्रथम सफेद सुरमें को अष्ट पुष्पी के रस में [illegible] दिन तक खरल करो पश्चात् नेत्रों में आंजो [illegible] में तारे दिखेंगे।

मृत बकरा बोले

पृथ्वी पर सिंदूर डालकर किसी बकरे के कटे हुए सिर को रखे व उसके मुँह में जिन्दा मेंढक रख दो और धूनी दे तो मेढक चिल्ला उठेगा लोग समझेंगे कि बकरा बोल रहा है।

॥ दीवार में आग लगाना ॥

चूने के पानी की जगह शरबत और मिट्टी का तेल लो, पश्चात् उसको पुतवाकर आग लगा दो उससे कुछ भी हानि न होते हुए दीवार जलने लगेगी।

॥ कपड़ा न जले ॥

कपड़े को शराब में भिगोकर आग लगा दो तो कपड़ा जलेगा। परन्तु इतना ध्यान रखे कि शराब समाप्त होने के पूर्व ही अग्नि बुझा देनी चाहिये।

॥ लाल फूलों को सफेद करना ॥

कनेर के लाल फूलों को यदि लोनिया गंधक की धूनी दी जाय तो सफेद हो जायेंगे।

जल पर मृगछाला बिछना

लिसोड़े का गूदा लेकर आठ बार मृगछाला पर लेप कर फिर यदि उसको पानी में बिछवाकर आसन कर बैठ जाय तो मृगछाला कदापि न डूबे।

अग्नि से हाथ न जले

नौसादर और कपूर दोनों को पानी में मिला हाथ पर मल ले और मलने के बाद उस पर अग्नि रखे तो कदापि न जले।

अग्नि से मुंह न जले

नौसादर और अलकतरा मुंह में चबाकर पानी से कुल्ला करे पश्चात् मुँह में आग रखे तो मुँह कदापि न जले।

पानी से दीपक न जले

खिरनी के दूध में रुई को भिगोकर छाया में सुखावे, पश्चात् उसकी बत्ती बनाकर दीपक में रख दे और उसके अन्दर पानी भर दे तो यदि बत्ती

॥ शीशा चबाना ॥

जलती हुई मशाल में शीशा डालकर उसको लाल करे फिर उसको अदरख के रस में रखकर चबावे तो जीभ में घाव न लगे।

॥ पानी दूध सा दीखे ॥

अरण्डी को भिगोकर पानी के साथ पीसकर बरतन में रखकर सुखाये फिर उनमें पानी मिलावे तो पानी दूध सा दिखाई देने लगे।

॥ गधे की रेंक बन्द करना ॥

घी और तेल मिला कर गधे के चूतर पर लगा दो जब तक यह लगा रहेगा गधे का रेंकना बन्द रहेगा।

॥ पेट में नाज बोले ॥

मंगल या रविवार के दिन चकोर को हांडी में बन्द कर किसी खेत में उत्तर की ओर दबा दे फिर फिर जो खेत के अनाज को खावेगा तो उसके पेट में अनाज बोलेगा।

॥ मुर्दा मछली जल में तैरे ॥

तेल व भिलावा में मरी मछली को भिगोकर पानी में तैरा दे तो मरी मछली तैरने लगेगी।

॥ बिना अग्नि के ज्वार भूने ॥

प्रथम सूअर के दूध में ज्वार भिगोकर सुखा ले पश्चात् उसको धूप में रखदे, तो थोड़ी देर बाद कपड़े पर ज्वार स्वयं ही भुनने लगेगी।

॥ हथेली पर सरसों जमाना ॥

दूध के रस में पहले सरसों को भिगो के और चार पहर तक छाया में सुखा ले, तब उसपर जल का छींटा देकर और हथेली पर मिट्टी रखकर उसमें बो दे तो अवश्य सरसों हथेली पर जम जायेगा।

॥ जल में पत्थर तैरे ॥

सात स्थल की विष्टा, मावे की गुठली इन दोनों को बारीक पीसकर पत्थर पर चारों तरफ लेपन करें सूखने के पश्चात् उसको पानी में छोड़ दे तो पत्थर स्वयं तैरने लगेगा।

जलाई जाय तो दीपक जलने लगे और लोग देख कर आश्चर्य करने लगेंगे।

॥ चलनी में पानी न छने ॥

चलनी में सात बार घी क्वार का गूदा मल कर छांव में सुखाये, फिर यदि उसमें पानी भरे तो पानी कदापि न छने।

॥ बिच्छु पैदा हो ॥

गोबर के अन्दर गदहे और गदही का मूत्र डाल दे और मिट्टी से ढक दे तो आठ दिन के अंदर बड़े २ बिच्छू पैदा हो जायेंगे।

॥ कहे से अण्डा डूबे उतराय ॥

पहले कांच के बर्तन के अन्दर नमक और तेजाब भरें फिर यदि उसमें अण्डा डाला जाय वह अज्ञाकारी होगा अर्थात् जब उसे डूबने के लिए कहा जाय तब डूब जायेगा और जब उसे ऊपर उठने को कहा जाय तो वह ऊपर उठ आवेगा। इसमें हाथ की सफाइ की परम आवश्यकता है।

दीपक न बुझे ॥

समुद्र का फेन और गन्धक की मिश्रित बत्ती बनाकर दीपक में डाल दे और उसमें तेल भरदे बत्ती जलने पर कैसी मेह और हवा हो दीपक कदापि न बुझेगा।

॥ अण्डा उड़ाना ॥

अण्डे में उसका मादा सुई से छिद्र द्वारा निकाल दे और उसमें ओस भरदे पश्चात् मोमसे छिद्र बन्द कर दे फिर यदि उसको धूप में रखा जाय तो अण्डा उड़ जाएगा।

॥ अक्षर बनाना ॥

नौसादर और भिलावा दोनों को बराबर सिरके में मिलाये और स्याही बनाकर कबूतर के पैर पर लिखे उस कबूतर से जो बच्चा पैदा होगा उसके पैरों पर वे ही अक्षर विद्यमान होंगे।

निबू से रक्त निकालना ॥

कटहल का अर्क छूरी पर लगाकर सुखा ले फिर यदि उसमें नीबू तरासे तो नीबू का अर्क रक्त के समान हो जाएगा।

पानी में दीपक जले

खिरनी के दूध को रूई में डूबाकर साये में सुखा ले और सात बार बांटकर उसकी बत्ती बना दे फिर दीपक में जल भर के बत्ती डालकर जला दे तो दीपक जलने लगेगा इसे देख कर लोग अत्यंत आश्चर्य करेंगे।

पानी में आग पैदा करना

गन्धक और नौसादर दोनों को पीस एक पाटली में रख ले जब आग पैदा करना हो तो पानी डालकर मले अग्नि पैदा हो जायेगी।

अग्नि से चांदी न जले

चीनिया कपूर हल्दी और पान का रस इन सबको एक में मिलाकर उसकी गोली बना ले और चाँदी का गोला रख कर आग लगावे तो कभी न जलेगी।

कागज की कड़ाही आग पर रहे

फिटकरी और कपूर को एक साथ पीसकर कागज के ऊपर लेप दे, तब उसकी कड़ाही बना कर अग्नि पर चढ़ा दे और इसमें जो मर्जी आवे सो बनावे कागज की कड़ाही नही जले।

बोतल में अण्डा उतारना

मुरगी का अण्डा ले अंगूर के तेज सिरके में एक सप्ताह तक रहने दे। इस बीच में ही अंडा उचकाया और नरम हो जायेगा अब उस अंडे को बोतल में धीरे धीरे उतार दे और पश्चात जल भर दे तो अण्डा फूलकर पूर्ववत: हो जायेगा।

नीबू उछलने लगे

नीबू से उसका रस निकाल कर इसमें पारा और सोडा बराबर भरकर सुराख को मोम द्वारा बन्द कर जेष्ट बैशाख के धूप में रख दे तो नीबू उछलने लगेगा।

पानी में आग पैदा हो

गन्धक नौसादर दोनों की एक पोटली बनावे फिर यदि उसपर पानी डालकर मले अग्नि उत्पन्न हो जायेगी।

हवा से आग पैदा हो

ऊंट की मेगनी को जलाकर शहद में बुझा ले और सुखाले जब अग्नि उत्पन्न की आवश्यकता हो तो मेगनी तोड़कर हवामें रखेतो अग्नि उत्पन्न हो जायेगी।

जलती हुई मोमबत्ती को खाना

बड़ा सेव छीलकर उसका गूदा निकाल कर मोमबत्ती बनाकर उस पर बादामी कागज का शिरा लगा दो वह मोमबत्ती सा हो जायेगा और जला कर खा जाओ। देखने वाले जानेंगे की यह जलती हुई मोमबत्ती खा गया।

मछली पैदा करना

मछली का अण्डा और जीली ... निकाल कर एक में मिलाकर रखने से ... मछली पैदा होती है।

चलनी में पानी भरना

घीक्वार लाकर उसका गूदा निकाल चलनी में सात बार मले और छाया में सुखा ले फिर उसमें पानी भरे तो नहीं गिरेगा।

॥ कसावती से सोना चांदी निकालना

पुराना या नया कसावती लेकर उसे चिराग पर जला लो, ताम्बे के चौड़े बर्तन में रखकर एक गोल पत्थर से पीस डालो। राख अलग हो फिर उस ... कर साफ कर लो और नये रुस में लगाकर ... कड़ी बना लो फिर उस बोतल को शोरा ... तेजाब में डुबा दो और उस बोतल को बालू ... यंत्र में गाड़कर नीचे आग लगा दो उसे गरम

कम छोड़ो और फीकी चाहो तो पानी अधिक दे

॥ सब्ज स्याही बनाना ॥

नीली और पीली स्याही मिला दो सब्ज स्याही बन जायेगी।

॥ मोहर की स्याही बनाना

जौ को कूट और माजूफल यह तीनों पन्द्रह भाग पानी में दे। दो भाग इन सबको एक घण्टे तक खूब घोल दो। पीछे छानकर इसमें पांच भाग सल्फेट आफ जोइरन और ४ भाग लोहे का चूर्ण मिलाकर आधा बोतल नीला पानी ३ भाग सल्फ्यूरिक एसिड इन सबको मिलाकर रख लो। रोशनाई बन जायेगी। यही स्याही लिखने में हरी मालूम होगी परन्तु सूखने पर स्याही काली हो जायेगी यह बहुत अच्छी स्याही बनेगी।

॥ हाथ पीले हो ॥

कच्चे आम लेकर छिलके को हथेली पर रगड़

॥ अर्क कपूर बनाना ॥

एक औंस कपूर, एक औंस साफ किया हुआ स्प्रिट दोनों को गलाने से अर्क कपूर तैयार हो जाता हैं।

लाल स्याही बनाना

कत्था सज्जी और पलुआ तीनों को बराबर बराबर लेकर अलग २ कूटे फिर अलग २ पानी और मोम छिड़क कर मिलावे। जब पानी व मोम मिल जाये तब ताम्बे के बर्तन में मोम और कत्था को पानी रखकर उसे आग पर चढ़ावे। जब उफान आया जान पड़े तब सज्जी का पानी व पेलुआ का पानी दोनों को उसमें डालकर खोलावे जब तीनों खौल आय तब उतार ले। लाल बस स्याही बन जायगी।

सफेद बाई डिनी को पानी में घोल दो तो स्याही बन जाती हैं। यदि रंग चाहते हो तो पानी

इस प्रकार से टुकड़े गलकर पानी हो जायेंगे जब टुकड़े पानी हो जावे और उसमें फदकना बन्द हो तो उसके पेंदे में जो काली गोंद जमा रहे उसके ऊपर से अर्क दूसरे चीनी के प्याले में तेजाब निचोड़ कर उस गोंदमें थोड़ा सा ठण्डा पानी डालकर धो डालो, फिर उस पानी को तेजाब में डाल दो और जो काली तलहटी में बच जावे उसे सुखाकर भुस में गाड़ दो. तो सौ नम्बर का असली सोना निकल आवेगा फिर उसे धोकर उबलते हुए पानी और तेजाब में और थोड़ा पानी मिलाकर उसमें साफ ताम्बे के थोड़े से टुकड़े डाल दो फिर उस शीशे को बालू के यंत्र में डाल नीचे से आग जलाओ जब पानी हो जाय तब नीचे से उतार कर रख लो। ताम्बा गलकर उसमें मिल जायेगा और चाँदी नीचे बैठ जाएगी जब ठण्डा हो जाय ,तब एक दूसरे प्याले में उसे निकालो फिर उस नीचे की गोंद को पानी से धोकर साफ कर लो और सुखाकर चाँदी निकाल लो।

कर सुखा लो। जब सूख जाय तो उस पर चूना पोत दो पीला रंग हो जायेगा।

हथेली पर सरसों जमाना

दुद्धी को छाल का रस ले उसमें सरसों भिगो दो जब सरसो खूब भींग जाय तब उसे निकाल कर छाया में सुख दो उन्हें हाथ पर रख कर पानी का छींटा मारो। पौधे उठेंगे।

लाल अक्षर दिखाई पड़े

यदि नारंगी के रस से लिखकर आग दिखलाओ तो अक्षर लाल रंगा दिखाई दे।

॥ अक्षर पीला दिखाई पड़े ॥

यदि दूध में थो ड़ासा नौसादर मिलाकर लिखे और इसे आग में दिखावे तो वे पीले रंग के दिखे।

॥ फतिंगे दूर हो ॥

यदि चिराग में फतिंगे बहुत आते हो तो उसमें प्याज का टुकड़ा रख दो। फतिंगे दूर हों।

॥ पानी से कपूर जले ॥

कपूर का टुकड़ा जलाकर पानी में डाल दो तो वह जलता ही रहे।

॥ सूत के कच्चे डोरे में आग बांधना ॥

सूत का कच्चा डोरा लेकर नमक पानी में भिगा दें सूख जाने पर उस पर आग का कोयला बांधे यदि डोरा जल भी जाय तो वह आग का कोयला न गिरेगा।

अण्डा उछले

किसी पंक्षी का अण्डा लेकर अन्दर से साफ कर डालो फिर पारा भरकर उसका मुंह बन्द कर दो फिर उसे किसी गरम जगह या गरम बर्तन पर रख दे तो वह आपही उछलने कूदने लगेगा।

केचुली में सर्प दिखाई पड़े

सांप की कैंचुली को लाकर उस पर रुई लपेट दो फिर चिराग लाकर उसे एकान्त

ध्यान में रखो कि जहां हवा नहीं लगे फिर उस केंचुली को चिराग से लगाओ तो उससे इस प्रकार धुआँ और स्टीम होगा कि बिल्कुल सांप की तरह बल खायेगा परन्तु बत्ती में किरासन वाली मिट्टी का तेल लगा दो।

कागज़ की कड़ाही में जो चाहो पकालो

खूब मोटा और कड़ा कागज लेकर उसकी कड़ाही बना लो। उसमें तेल भरकर कोयले की आग पर रख दो। फिर तुम्हें जो बनाना हो उसे गरम तेल में बना लो। कड़ाही न जले।

कोयला की बत्ती जले

लकड़ी के कोयले को पीस कर बारीक करके चावलों की भूसी गूंथकर टिकिया या बत्ती बना कर सुखाओ, जब तुम जलाओगे फौरन जल उठेगी।

चूने में आग लगाना

बगैर बुझा चुना और दो दाने फासफोरस

के आपस में मिलाकर एक कपड़े में बाँध कर किसी पीतल के बर्तन में रखदें और पानी की थोड़ी बून्दे उसमें डालकर दोनों को मिला दें। तो उसमें आग पैदा हो जायेगी। क्योंकि चुना गरम होगा तो फासफोरस जल उठेगा।

चिराग में धातु का तार जले

प्लेटिनम जो एक प्रकार की धातु होती है और अंग्रेजी दवाखानों में मिल सकती है उसे लेकर उसके तार बनाओ फिर चिराग में शराब भर उसमें एक बड़ी बत्ती डालो मगर यह तार उस बत्तीके चारो तरफ लपेट कर उस चिराग को जला दो जब बत्ती की गर्मी से तार का रंग लाल हो जाय बत्ती निकाल डालो तार को वैसा ही रहने दो। जब तक चिराग में शराब रहेगी वह तार लाल रहेगा। और इस तरह लाल होगा कि उसकी रोशनी में बखूबी पढ़ सकोगे।

हाथ से बिजली कीचमक पैदा हो

एक बड़ी बत्ती बनाकर तेल में भिगोकर उसको जलाओ हाथ और अंगुली के बीच इस प्रकार पकड़ो की बत्ती सीधी खड़ी रहे पिसी हुई राल थोड़ी सीह थेलियों पर रखकर फूंको वह ऊपर ऐसी उड़ेगी कि जैसे बिजली चमक गई हो अगर राल में थेड़ा तेल पीस कर मिला दोगे तो रंग आसमानी हो जायेगा अगर अंजीर या नीला थोड़ा सा बुरादा या जस्ता मिला दोगे तो हरा रंग हो जायेगा अगर साफ सुरमा और पोटास मिला दो तो लाल रंग हो जावेगा।

....

अंग्रेजो ढंग से आतिशबाजी महताबी बनाना

असली तरकीब क्लोरेट आफ पोटास १६

हिस्सा नाइट्रीट आफ बराटको १६ हिस्सा, गन्धक ५ हिस्सा, कोयला ६ हिस्सा।

दूसरी तरकीब – क्लोरेट आफ बेनेरिस ५ हिस्सा, गन्धक १ हिस्सा।

लाल...नाइट्रीट आफ बेरेटिव १६ हिस्सा कोयला १ हिस्सा।

लाल रंग की पहली तरकीब - क्लोरेट आफ पोटास ६ हिस्सा, लेफसागर ७ हिस्सा परमानेट आफ टेन्टस ११ हिस्सा।

लाल रंग की दूसरी तरकीब - आर्ट्रेट आफ सिटरोतसी १०८ हिस्सा, हीरा कशीश ३१ हिस्सा क्लोरेट आफ पोटास ६ हिस्सा, कुश्ता पारा या रस कपूर १४ हिस्सा, गंधक ६ हिस्सा, चपड़ा [लाल) २ हिस्सा, कोयला एक हिस्सा।

पीले रंग की पहली तरकीब...मैंगनेट आफ पोटास ८ हिस्सा, लक्नीलर आफ सोडा ४ हिस्सा, पोटास ८ (लाल २ हिस्सा)

पीले रंग की दूसरी तरकीब..मैंगनेट आफ

भरी हुई तबेली का पानी गायब हो

एक बोतल में पानी भरकर उसमें एक छोटी सी गोल ईंट रखकर एक चिराग में जिसमें मोटी बत्ती हो। रख दो और एक चिराग जलता हुआ चिराग पर इस तरह रखो कि चिराग जलता हुआ यह ईंट के उसके मुंख में आ जावे

बस थोड़ी देर में तबेली का पानी गायब हो जायेगा।

मोम का बतख पानीमें तैरे

एक बतख मोम की अन्दर से पोली बनाओ उसकी दुम में छेद करके और उसको एक मटके में पानी में नकम छोड़ दो तो पहले वह बतख डूब जायेगी लेकिन कुछ ही देर में जबकि नमक पानी में घुल जायेगा वह पानीके बाहर तैरने लगेगी तो देखने वाले समझेंगे कि बतख पानी में गोता खा कर निकली है।

निकाल कर इसको पीस किसी बर्तन में रख दो तमाशा के वक्त थोड़ासा पानी उस बर्तन में डाल-कर खूब हिलाओ। फिर पानी दूध बन जायेगा।

लोहे के वस्तु तांबे की रंग की हो

नीला थोथा जल में पीसकर लोहा या कांच पर लगावे तो वस्तु तांबे रंग की हो जाये।

पानी उबलना

गिलास में सोडा या सादी सज्जी जरा डाल कर और दूसरे बर्तन में इमली या नींबू का सत जो सादा होता है जला दो जब दोनों बर्तनों का पानी आपस में मिलाया जायेगा तो पानी अपने आप उबलने लगेगा।

पानी पर गेहूँ तैरे

चूना सफेद को बारीक छानकर पानी पर छिड़को फिर उस पर जिस तरह चाहो गेहूं के दाने टप-काते जाओ तो दाने नहीं डूबेंगे।

....

नाइटस १७ हिस्सा, लम्सीलेण्ड आफ सोडा ४, हिस्सा, क्लोरेट आफ पोटास २ हिस्सा, गंधक २, हिस्सा, चपड़ा (लाल)

॥ पानी का खेल ॥

अक्षर साफ दिखे

चूने से सफेद कागज पर लिखकर सुखा दो कुछ न पढ़ा जावेगा। मगर पानी में डालने से सब दिखाई देगा।

बढ़िया फालूदा जमाना

कतीर सफेद और मिसरी थोड़ी केशर इन तीन चीजों को आपस में कूटकर उसे पुड़िया बना कर रखो। तमाशा के वक्त एक पानी का प्याला मंगा कर पुड़िया उसमें छोड़ दो और उस प्याला को ढक दो। थोड़ी देर में जायकेदार बढ़िया फालूदा जम जावेगा।

पानी दूध बन जावे

एरण्ड के बीज को भून कर उसका मगज

टीन की बतख जल में दौड़े

टीन की बतख बनाकर उसकी चोंच में एक टुकड़ा बढ़ियां चुम्बक पत्थर का लगा दो फिर एक लोहे की सुई को डोरे में बांध उसके पास करो तो वह बतख चुम्बक और लोहे की आकर्षण गति के कारण उसके पीछे भागेगी।

॥ कुत्ता नाच ॥

पिसी हुई दालचीनी को आटे में गूंथ कर टिकिया पकाओ और कुत्ते को खिलाओ तो कुत्ता नाचने लगेगा ॥

कागज का घोड़ा चले

एक घोड़ा कागज का काट करके उसके पैरके नीचे एक कमानी लगा दो और मेज पर रखकर छोड़ दो वह घोड़ा अपने आप चलेगा फिरेगा मगर याद रहे दो कमानियां नहीं हो नहीं तो घोड़ा फिर गिर पड़ेगा।

रबर की मुहर बनाना

रबर की मुहर बनाने का काम थोड़ी लगन

हो सकता है और इस काममें लाभ भी बहुत अच्छा है आजकल व्यापारी तथा दफ्तर के लोगों में इसकी मांग भी बहुत है। इस काम को थोड़ा पढ़ा हुआ आदमी भी बहुत सुगमता से कर सकता है क्योंकि इसमें केवल अक्षर पहचानने की ही आवश्यकता पड़ती है।

बनाने की विधि—

पहले जिस नाम की मुहर बनाना हो उन्हीं अक्षरों को टाइप केश से निकाल लो और स्प्रिट के अन्दर जिसको जैसी माहर बनाना हो लगा लो फिर प्लास्टर आफ पेरिस दो भाग फ्रेंच चाक आधा भाग, मोलडिंग कम्पोजीशन ३ भाग डेक्ट्रीन चौथाई भाग लो और इस काम के करने में जल्दी करनी चाहिए क्योंकि सूखने पर वह बेकार हो जाती है और इसको एक तस्तरी में छूरी से ... कर फैला लो फिर पहले सांचे पर जो तैयार ... गया था उसपर गरी का तेल लगा दो इसे

फिर तैयार किये हुये मशाले पर रखो फिर उसको इतना दबाओ की मसाले में अक्षर स्प्रिट के बिल्कुल वैसे ही निशान बन जावे अब इसको इसी तरह १४ घण्टे तक रखा रहने दो कुछ समय के बाद सावधानी के साथ टाइप लगे हुये स्प्रिट को मशाले में से निकाल दो इसके बाद प्लास्टर वाले सांचे को लोहे के फ्रेम पर रखो व उस पर नाम की खत काटकर रख दो व फिर प्रेसचानी को घुमाओ कि ऊपर की प्लेट रबर बिलकुल मिल जाये ये उसको इतना दबा लेवे कि वह हिलने न पावे दाब भी अधिक न हो, फिर फ्रेम उठाकर जलते हुये कोयले पर रख दो, अब गरम होने पर फ्रेम की चाभी फिर घुमाओ। अब ध्यान देकर देखो कि रबर के रंग में क्या २ परिवर्तन होता है जब इसका रंग में स्लिट की तरह हो जाये और इसमें गंधक आने लगे तो इसको तुरन्त आग से उतार

कर ठण्डा कर लो फ्रेम ठण्डा होने पर सांचा निकाल कर रबर हटाओ और रबर के बेकार हिस्से को नाखून से साफ कर काठ के हैंगर पर सरस से चिपका दो।

रबर की मुहर पर एक चौकोर काठ का टुकड़ा लो और इसे पुराने कम्बल की दो तह उतनी बड़ी काट दो और उतनी ही बड़ी पतली कौली से जड़ दो और ठीक उतनी ही बड़ी टीन की डिबिया में खूबसूरती से फिट कर दो।

लाल रंग की रोशनाई बनाना

गुलेनार का रंग आधा तोला रेक्फिाइड स्प्रिट २ तोला ग्लेशन २ तोला (तरकीब) पहले ग्लेशन को मिलाकर उसमें डाल दो।

इस काम के करने के वास्ते करीब ४०० ० की रकम बहुत है और अगर यह काम चले

जीवे तो मनुष्य १० दिन अच्छी तरह से काम कर सकता है।

लाख की बत्ती बनाना

रबर की मुहर की तरह आज कल सिलिंग वक्स की भी जरूरत दफ्तर एवं दुकान, बैंक व डाकखाने वगैरह में बहुत होती है। क्योंकि लाल लाख तो बहुत मंहगी आती है और ऐसी जगहों पर खर्च अधिक होती हैं इसलिये वे लोग ऐसा कोई कम दाम की चीज तलाश करते हैं। नीचे लिखी हुई तरकीबों से जो सीलिंग वक्स तैयार की जायेगी वह लाल सीलिंग वक्स के मुकाबले में कहीं सस्ती होगी व बनाने वाले को बचत होगी

इसके बनाने में मुख्य चीज कोलपीच है। यह काला कमो की और ठोस चीज है। बाजार में यह करीब ७० रु० मन मिलती है।

॥ बनाने की विधि ॥

पहले कोलपीच को आग पर गरम करें

[ग]रम होने से यह पिघल जायेगी गरम होने पर [इ]समें से धुँआं निकलता है इससे बचना चाहिये [क्य]ोंकि यह खांसी लाती है, फिर इसको साँचो में [ड]ालकर बत्तियाँ केशक्ल में बना ले। [ए]ेसी [को]शिश करें कि एक पोंड [आधा सेर] में २० [ब]त्तियां बनेगी...

लागतः...

कोलपीन एक मन	७० रुपये
मेहनत मंजूरी	७० रुपये
अन्य खर्चा	८ रुपये
कुल खर्चा	१४८ रुपये

१ मन माल की बिक्री की आमद २६० पैसे [प्र]ति पौंड के हिसाब से १००० रुपये, इसे आप [स्व]यं ही देख सकते हैं कि इसमें कितना लाभ है।

॥ स्याही बनाना ॥

[थ]ोड़ी पूँजी से बहुत-सा रुपया पैदा करना है। [ह]र तरह के लिखने पढ़ने वालों को स्याही

परन्तु स्याही बनाते समय इस बात का ध्यान रखना कि यह स्याही पत्थर या शीशे के बर्तन में बिगड़ जायेगी।

ब्लू ब्लैक बनाने का तरीका

ब्लू ब्लैक का दूसरा नुस्खा और है। इसे भी कई लोगों ने आजमाया है उनका कथन है कि इस नुस्खे को एक बोतल यानी बारह छटांक स्याही तीन रुपये में बनती है इस तीने रुपये में बोतल लेबिल वगैरह का सब शामिल है नुस्खा यही है।

१- माजूफल	१४ भाग
२- हरा कसीश	५ भाग
३- लोहे का बुरादा	४ भाग
४- नील	आधा भाग
५- गन्धक का तेजाब	३ भाग
६- पानी	२०० ग्राम

नाने की विधि...माजूफलों को कुचलकर थोड़ा सा पानी में डाल कप में उबालो और फिर

के मुकाबिले की है। यह सब चीजें ठीक तरीके
पर ली जाय और बनने में कोई गलती न हो

स्याही बनाने की विधि।

१- माजूफल ११८ औंस, २ हरा कसीस, ६ औंस
३- लौंग आधा औंस, ४ गन्धक तेजाब, २ ड्राम
५- पानी १० पाइन्ट। ६-नील हल किया हुआ
१- औंस।

माजू फल और लौंग को खूब कूट डालो और फिर उन्हें १७ दिन तक पानी में भिगोकर रखो जिस बर्तन में यह दोनों चीजें भिगाई जाय उसे रोज खूब हिलाते रहना चाहिये। जिससे माजू फल वह लौंग आपस में अच्छी तरह घुल जावें! इसके बाद हल किया हुआ नील मिलाओ जब यह सब वस्तु मिल जाय तब बर्तन को एक या दो दिन तक रखा रहने दो इससे इन वस्तुओं में रसायनिक प्रभाव पड़कर उत्तम स्याही बनेगी। उसे भली भांति गाढ़े कपड़े से छानकर बोतल में बन्द करके काम में लाओ

की जरूरत पड़ती है। स्याही के बगैर लिखने पढ़ने का काम हो ही नहीं सकता। पहले ज़माने में कागज काली से स्याही बनाते थे और बनिये व व्यापारी सब अपने-अपने बही खाते इसी स्याही से लिखते थे। यह सबसे बढ़िया और पक्की समझी जाती थी परन्तु जब से अंग्रेजी पढ़ने लिखने का रिवाज चला तब से ब्लू ब्लेक या नीली स्याही सब जगह काम में आने लगी है। यह स्याही सबसे अच्छी स्टीफेंसन साहब की है जो विलायत से आती है यहां पर बहुत से लोगों ने नीली और काली स्याही बनाई पर स्टीफेंसन साहब के मुकाबिले में कोई स्याही तैयार नहीं हुई। कोई न कोई ऐब यहां की बनी स्याही में रह ही जाती है जिससे कि जो नुस्खा नीली काली स्याही का मिला है उसके बारे में कहा जाता वह स्टीफेंसनसाहब

छान लो। बाकी पानी में हरा कसीस को घोल लो और नील को गन्धक के तेजाब में डाल कर दो लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि नील और तेजाब अच्छी तरह घुल जाय अर्थात् नील और तेजाब एक हो जाय फिर इन दोनों चीजों को आपस में मिला दो अर्थात् तेजाब युक्त नील और तेजाब जो पानी मिला देने से एक तरह एसिड पानी एक तरह का तेजाब बनने लगता है। इसमें कोले का बुरादा डाल देने से तेजाब बंद हो जाता है इस मिश्रित पदार्थ को कई दिन तक रखे रहने दो फिर वह पानी जिसमें मांजूफल उबले गये थे मिला दो सब खूब हिलाकर फिर कपड़े से छान लो और बोतलों में बंद करके रख दो। यह स्याही स्टीफेंस साहब के मुकाबिले की बन जाएगी।

कापी इंक बनना

कापी इंक की भी दफ्तरों में प्राय जरूरत पड़ती हैं बहुत से दफ्तरों में समय बचाने के लिए कापी इंक से ही काम लेते हैं। कापी से जो कुछ एक कागज पर लिखा जाता है वहीं दूसरे कागज पर उसके नीचे रख दिया जाता है जो लिख जाता है।

बनाने की तरकीब :...

१- पानी	३ सेर
२- मांजूफल	३ पाव
३-तांबा	३ पाव
४- चन्दन	आधा सेर
५- बबूल का गोंद	एक छटाक
६- गिलास	आधा छटाँक
७- सिरका	आधा सेर

इन सब चीजों को मिलाकर एक घण्टे तक आग पर खुब गरम करो फिर छान कर बोतलों में भर दो। बढ़िया इंक बन जाएगी।

विलायती दियासलाई की भांति देशी दियासलाई बनाना

मामूली दियासलाई में सिर्फ लकड़ी के छोटे टुकड़े होते हैं, जिसके सिरों को सिर्फ गन्धक में डूबा कर ऐसा मसाला ऊपर से लगा देते हैं जिससे रगड़ने से आग पैदा हो और यह इस तरह से तैयार होता है मामूली फासफोरस ५ भाग नाइट्रेट १६ भाग, तेटडलीड ३ भाग, नाईट्रागलीट ६० भाग।

मामूली फासफोरस ६ भाग नाइट्रेट २३ भाग, बाइनोआक्साइड आफ मैंगनीज १४ भाग गोंद या सरेस १५ भाग पहले सरेस को गरम करो। २२२ फी सैंकड़ा फिर फासफोरस धीरे से डालकर मिला दे तब नाइट्रेट इत्यादि चीज डाल दे और इस मशाले को ६६ फी सैंकड़ा की गरमी पर गरम पानी को रखे और इनमें दियासलाई को डौंप देकर रखो अगर गोंद मिलाया जाय तो

आसानी होती है ये सब चीज वगैरह गरम किये भी बन जाती हैं, मगर दियासलाई थोड़ी ही सीलन में खराब हो जाती है।

choura Matches मशाले क्लोरेट आफ पाटास ३० ग्रेन गन्धक के फूल ग्रेन पिस हुआ कन्द ४ ग्रेन पिसा हुआ अखिमोंद ५ ग्रेन और रङ्ग देने को थोड़ा सा और बरामन दे पहले क्लोरेट को किसी उम्दा संगमरमर या और किसी खरल में खुब महीन पीसले एवं इसे पत्थर की साफ सिल पर रख एवं सब मशाले डालकर ठाठ या हड्डी के चाकू से मिलावे बीच में थोड़ा २ पानी डालकर लेई सी बना ले एवं सलाई या तो चीड़ वगैरह की लकड़ी की पैमारी होती हैं। डूबो दे और निकाल कर एक थोड़ी गरल जगह में होशियारी से सुखा लें।

॥ अंग्रेजी दियासलई ॥

२ भाग उम्दा सरेका पानी मे भिगा दे कि खुब फूल जाय ६ भाग पानी मिलाकर गरम

करें। जब मिल जाय और एक उम्दा उसका हो जाय तो एक या दो भाग फासफोरस मिला दें और एक लकड़ी की चम्मच से डालकर पंसे चलाते जाये कि मसाले नीचे न जम जाय फिर आफ पोटास २ या चार भाग पिसा हुआ कांच और थोड़ा सा लेट स्माट जेसी चीजें रंग देने को मिला दे और जब तक ठंडा न हो खूब अच्छी तरह चलाते जाएं।

Frteon उम्मदा सरेश २ भाग, पानी २ भाग फासफोरस १॥ या दो भाग, पोटासियम क्लोरेट ४ या पाँच भाग पिसा हुआ ग्लास ३ या ४ भाग थोड़ा लाल या सफेद देने को।

Pooiy1 इसके को खूब सुखाकर सिरसे को पिघली हुई इस्टीयरेन में भिगोकर नीचे लिखे मसाले में डुबो दे लाल फासफोरस २ भाग गर्म सेधिकियां टुकक्रियु ४॥ भाग पानी २ भाग बारीक बालू २ भाग बाईनो जाइड २ भाग

और फिर वेनजोक सिक्डे सोल्युसन में एक डोष दे और काँम में लावें।

* बिना फासफोरस की दियासलाई *

ऐसी दियासलाई बनाने में ४ या ६ भाग क्लोरेड आफ पोटास २ भाग जाइड आक्साइड और तीन भाग गाढ़ा सरेस मिलाकर काम में लाते हैं। और डिबिया पर घिसने का २६ भाग सल्फेट आफ एन्टीमनी २ या ३ भाग बाइक्रोमेट आफ पोटास ५ या ६ भाग पिसी आगजाइट आफ इगर आइसन आक्साइड आफ इग्टी ग्लोर ली जाय मेग-नीज तेज सरेस या गोंद यह दियासलाई मसाले पर रगड़ने से जल जाती है।

नीचे लिखे दियासलाईयों में उनके अलग रगड़ने का मसाला बनाने की भी जरुरत नहीं होतीहै पेटेसियम क्लोरेट २२ औंस मेननिज ब्लेक आगजाइड २ औंस पोटेसियम बाई क्रमेट औंस लाल शियेनाईड २० औंस एस

लकड़ी बना काक्स में बन्द कर रख देना चाहिए ॥

कार्बोलिक साबुन

५०० तोला साबुन में ७१ तोला कारबोलिक एसिड साबुन बनाते समय डाल दे कारबोलिक साबुन बन जायेगा। यह घाव धोने के काम में आती है।

नोट – कास्टिक सोडा ६० डिग्री से ६८ तक होता है यदि शरीर पर लगाने का बनाना हो तो २६ डिग्री का सोडा में मिलावो।

दूध के झाग

दूध औटाकर उसमें कुछ समुद्र का फन और ...कर डालकर खुली हवा में रख दो और सवेरे ...मक्खन निकालने की मसीन या मथानी (रही) ...मथा जो झाग निकले उनको मिट्टी के ...याले में रखते जाओ एवं फिर ऊपर से मेवा ...आदि डालकर दो खोचे में रखकर एक एक ...पया में बेचो ऐसा करने वाले दस बीस रु० रोज

खारा खराब न हों और बर्तन भी चीनी या कलई किया हो। जब सोडा गल जावे तब उतार कर छान कर एवं ठण्डा करने को किसी नाद या टप में रखो फिर चीमनी कलाई किये हुए बर्तन में नारियल का तेल गर्म करके ठण्डा तेल तैयार रखो यह बर्तन बड़ा होना चाहिए। अब धीरे धीरे डालते जाओ और कौंच से चलाते जाओ बाद में लेई निकाला हुआ तेल गाढ़ा और खुश्बू डाल देना चाहिये। फिर खूब चला कर काठ वाले साँचे में करके पेंच कस देना चाहिये। इसके बाद उस में में २४ घण्टे तक रखा रहने दिजिए फिर उसे निकाल कर साँचे के अनुमान चकती काट कर तार में पिरो कर छाया में एक दिन रात सूखने के लिये लटका देना चाहिए। सूखने से सांचे में डाल कर

ट्मी आगजाइड सल्फाइड एक फमोनी [illegible]
२० औंस कासा पीसा हुआ ४ औंस इन मसालों
को अलग अलग पीसकर एक पोंड गोंद ४
औंस पानी में हल करें और तब तक मसाला
मिलाये जब तक लेई सी न हो जाय तब लकड़ी की
सीको पर लगाकर गरम जगह [८६] फी सैकड़ा
८१ ठा रखने के बाद दियासलाई डिबिया में
रखने लायक और हो सकती है मगर इससे
पहले एक पोंड उम्दा सफेद मैं पाइट अल्कोहल
या गूड़ने तथा मिलाकर कई दिन पहले एक छोटे
से उम्दा वर्तन में रखदे और बराबर चलाते जाय
और उम्दा तरह से छानकर तैयार रख और इसके
अन्दर एक डोब देने से वह सरदती नहीं यानी आ
सीलन पहुँचने से वह आपस में चिपकती नहीं।

* विदेशी पवित्र साबुन बनाना *

कास्टिक सोडा ८० तोला देकर दो सेर
पानी में डालकर गरम करें ध्यान रहे सजल

कमा लेंगे। सरदी के मौसम में यह दूध बिकता है।

कोयले की टिकिया

गाँव के लोग अधिक खरीदते हैं। लकड़ी गूंधो और छोटी टिकिया बनाओ हुक्का पीने वालों के लिये यह आराम देने वाली चीज है। एक दियासलाई दिखाकर आग लगा देनो से चिलम के लिये पूरी आग बन जाती है (तरकीब) चिलम में टिकिया तम्बाकू के ऊपर ठीक बैठ जावे ऐसे सहज में उन्हें बनावें। ५ रुपये के कोयले में ६०० टिकिया बन सकती हैं और १६, १६ देने से १० रुपये हो जाते हैं।

पीतल का गिलट

एक भाग गन्ध तेजाब और नौ भाग शोरे का तेजाब सफेद मिट्टी या पत्थर के बर्तन में रख तथा अन्य दो दो बर्तन में साफ आदि रखा फिर पीतल आदि के तार में गहने आदि बाँध कर तेजाब में डुबाकर तत्काल निकाल लो

और फिर क्रम से साफ पानी में डुबाये। पानी या उन चीजों में कोई तेल आदि लगा हो तो सोडा और पोटास के पानी से साफ कर दें।

जर्मनी सिल्वर

तांबा १ काम जस्ता १ भाग और निकिल २ भाग तीनों को मिलाने से उत्तम जर्मनी सिल्वर बनता है।

नोट —कोयला खूब बारीक पीसना चाहिए।

* तूतिया *

गन्धक का तेजाब और तांबा बराबर मिलाकर कड़ाही में जलावे तो तूतिया बन जायेगी।

॥ हरा कसीस ॥

गन्धक तेजाब के साथ लोहा मिलावें।

॥ पीतल ॥

दो भाग तांबा एक भाग जस्ता मिलाने से। पीतल बनती है।

॥ कांसा ॥

तीन भाग तांबा एक भाग रांगा से बनता है।

एको एमोनियां डालकर लकड़ी को कूट सुखाने से अच्छा और आसानी से होता है तब अगर धातु पर क्लोराइड आफ सिलवर को पानी में हल करके मला जाय तो अच्छी कलइ हो जाती है।

चांदी का चकदार

सफेद जीरा ३६ औंस, असली तेल की बानिस, सफेद मुर्दाशंख एक औंस काम में लावे

॥ योग विद्या ॥

महात्मा पंतजलि रचित योग शास्त्र किसी से छिपा नहीं हैं किन्तु इसका तत्व जानना महानुभाओं का ही काम है साधारण गृहस्थ का काम नहीं है।

अब स्वरूप मैस्मेरेजम बड़े काम की वस्तु है। इससे बड़े २ रोग जादू की भांति छू मन्तर करके मिनटों में आराम दिया जा सकता है॥

प्रत्येक मनुष्य के शरीर में एक प्रकार की शक्ति होती है। जो नियम साधना द्वारा आश्चर्य जनक काम कर सकती है। इस शक्ति को जान लेना ही विद्या का नाम है। मैस्मेरेजम के दो भेद हैं १...आरोग्य का नाम २...आलौकिक कार्य साधक।

सब्ज स्याही बनाना

नाइट्रीट आफ पोटास एवं मोम को और केलशियम एसिड दोनों को अन्दाज से पानी में मिला देवें तो सब्ज स्याही बन जाती है तथा नीली और पीली दोनों रोशनाइयों को मिलाने से सब्ज सी रोशनाई बन जाती है।

नीली स्याही बनाना

यदि सल्फेट और इण्डगो को पानी में घोल दें तो नीली स्याही बन जायेगी।

सुनहर की स्याही का दूसरा प्रकार

पनरस दो भाग आयल आफ वेण्डर २ भाग, कागज दो भाग, नील एक भाग, इन सभी को

मिलाकर मलावें तो मुहर की स्याही बन जायेगी।

तीसरी प्रकार

मैजेण्डर दो तोला में ग्लेशरीन १ छटाक मिला दें तो मुहर की उत्तम स्याही बन जायेगी

चौथी प्रकार

कागज ४ भाग, एसफैलटम एक भाग, इन दोनों को गलाकर फिर उस में मशीन का तेल डेढ़ भाग मिला कर पकायें। जब उसमें तार बंधने लगे तो स्प्रिट आफ टरपेन्टाइन ४ भाग मिला दो टरपेन्टाइन का अंश कम रहने से स्याही अच्छी बनेगी फिर जिस वस्तु पर एकबार मोहर कर दिया जायेगा वह दाग कभी नहीं छूटेगा।

मुहर की लाल स्याही

सिंगरफर ४ भाग, एल फ्रेट अफा आइसन २ भाग, सूख जाने वाला थोड़ा सा तेल, इन तीनों को मिलाकर खूब हिलायें। बस मुहर की लाल स्याही बन जायेगी।

धोबी की काली स्याही बनाना

चूना आफ सिलौंग, बोतल गोंद ४ तोला लेकर दोनों को एक में मिला दो स्याही कभी न छूटेगी काली स्याही बन जायेगी। धोबी लोग कपड़ों के पहचान के लिये यही स्याही प्रयोग में लाते हैं।

सुनहरी स्याही बनाना

हरताल नमक ८ तोला, सोने का वर्क आठ तोला जेवाखार आठ तोला अण्डू की जर्दी आठ तोला इन सब को लेकर गरम पानी में मिलाओ जब पानी निकल आये तब धीरे २ निकाल ले फिर जो दिखे गोंद बैठी रहेगी उसे बोतल में भर कर चार पांच दिन तक धूप दिखाओ तो उसकी बहुत सुन्दर स्याही बन जायेगी।

दूसरी विधि

सोने का वर्क और शहद को एक में पीस लो। फिर एक चीनी के बर्तन में पानी भरकर हिलाकर जल गिरा दो। फिर सुनहरी

रहे कि साबुन के अन्दर पानी का अंश रहता है। अतएव इसके डालने के समय उसमें उफान आता है इसको भी सम्हाले रखे। पश्चात् राल और साबुन इन दोनों को सीखचे से खूब मिलावे ऐसा कर सब वस्तुयें नलकर एक में मिल जायेगी, पश्चात् सात तोला प्रेशियन बिल्यू को महीन पीसकर छोड़ देवे और विलायती कोयले का कागज दो सेर सब को मिलाकर एक कर लेवे। बस इस प्रकार छापने की बढ़िया स्याही बन जायेगी।

॥ कागज बनाना ॥

समय अर्ध दो भाग स्टार्च ६ भाग और अल मर २ जोश देकर सोल्यूशन कर मिला दें फिर कागज पर ब्रस या हाथ से दो तीन बार छोड़ कर सुखा लो।

कपड़े का दाग छुड़ाना

किसी कपड़े या अन्य चीज पर से मोमबत्ती

मिलावे इससे स्याही का रंग भूरा हो जायेगा।

स्मरण रहे कि तेल पकाने के समय जब तेल
से धुआं निकलने लगे, तब एक लकड़ी से बांध
कर एक कागज के टुकड़े से आग देवे और
उसमें जलते हुए कागज को छोड़ दे, तेल जल
उठेगा फिर कागज सब जल जाने दे और तेल को
वैसे जलता हुआ आग से उतार ले उसके
नीचे अर्थात् चूल्हे से आग खींच ले और तेल गाढ़ा
होने दें फिर जरासा निकाल कर बराबर बन्धे तो
समझ लें कि यह स्याही के लिये तेल तैयार हो
गया। यह तेल सर्दी में जम कर गाढ़ा पड़ जाता
है और गरमी में पिघल कर पतला हो जाता है।
अतएव गाढ़ा और पतला तैयार करना चाहिये।
इस प्रकार तैयार किये ३ वायलों के तेल छः रती
... न तेल को गरम कर झाग मिट जाने के बाद
... थोड़ा २ करके अन्दाज से मिला दो। पता

बैठ जावेगा उसे निकाल कर ऊपर ऐसी क्रिया किया करें और पश्चात् उसमें गोंद मिलाकर स्याही तैयार कर लें।

छापने की स्याही बनाना

अलसी का तेल लेकर उसे इतना औटावो कि मानो अब उसमें आग लग जायेगी। जब उसे एक ऐसे ढक्कन से ढक दो जिसमें हवा न लगे फिर उसमें राल मिला दो तो स्याही और भी अच्छी बन जायेगी फिर उसमें साबुन छोड़ दो बिना साबुन छोड़े, स्याही टाइप पर जम जाती है और टाइप बहुत जल्द खराब हो जाती है अतः रोजाना साबुन अवश्य छोड़े, साबुन अक्षर पर न पड़े नहीं तो छपाई सही नहीं होगी और अक्षर भरने लगेंगे इस कारण साबुन अन्दाज से छोड़े। फिर उसमें कागज और वेजिटेबिल लेम्प ब्लेक को भी मिला देवें। फिर आइवरी ब्लेक को लेकर पानी से धोकर मिलाने और नील अथवा प्रशियन ब्लू को थोड़ा

घी तेल आदि का दाग छुड़ाना हो तो मेथिलेटेड स्प्रिट मलना चाहिए।

॥ मुरब्बे के टिकाउ होने की तरकीब ॥

किसी चीज का मुरब्बा बनाना हो तो चाशनी में थोड़ा सा नीबू का रस डाल दीजिए। मुरब्बा ज्यादा टिकाऊ व ज्यादा स्वादिष्ट हो जायेगा।

जूते टिकाऊ हो

पेटेन्ट लेदर जूतों पर कभी २ वेसलीन लगा कर कपड़े से रगड़ दिया करें तो मुलायम और चमकदार बने रहेंगे और ज्यादा दिन चलेंगे।

बाल चमकदार हो

साबुन से बाल धोने के बाद थोड़े पानी में दो चार बून्द राल अमोनियां डालकर उससे धो दीजिये, बाल चमकदार और सुन्दर हो जायेंगे।

रंगीन कपड़े धोना

रंगीन कपड़े धोने हो तो आखरी दफे साफ पानी में धोवे उस समय कुछ फिटकिरी पानी में

मिला लिया करें इससे उनका रंग ठीक बना रहेगा खराब न होगा।

॥ कपड़ों को एकदम सफेद धोने की तरकीब

कपड़ों को एकदम सफेद करना हो तो जल सोडा और तनिक किरासन तेल (बहुत थोड़ा सा) मिला आग पर चढ़ा दीजिए। आधा घण्टा उबल जाने पर मामूली तौर से साबुन से साफ कर डालिये। इससे कपड़े खूब सफेद धुलेंगे।

वार्निश बनाना

एक बहुत अच्छी वार्निश इन चीजों से बनती है। तीसी और तार्पीन का तेल बराबर लेऔर उससे दूनी मेथिलेटेड स्प्रिट और सिरका पहली वाली चीजें आधा गिलास हो तो बाद की दोनों चीज एक साथ गिलास में घोलकर बन्द कर रख दें जहां कहीं लगाना हो उसको हिला कर लगावे।

काली पालिस बनाना

एमोनियां में सुरमा मिलाकर बहुत अच्छी पालिस

बनाई जा सकती है। दिये के काजल का मील के साथ मिलाकर अच्छा काला रंग बन सकता है।

खुशबूदार चाय बनाना

चाय बनाते समय एक टुकड़ा नींबू या नारंगी का सूखा हुआ छिलका डाल दिया जाय तो बहुत सुन्दर खुशबु आ जाती है।

ऊनी कपड़े धोना

ऊनी कपड़े धोते समय आखिरी पानी में दस बीस बूंद जैतून का तेल मिलाकर उससे धो दिया जाय तो कपड़े खूब मुलायम हो जायेंगे।

पावरोटी को ताजा करना

पाव रोटी बासी हो गई हो तो थोड़ी देर तक उसके उपर एक गीला कपड़ा लपेट रक्खो और फिर कपड़ा हटा चूल्हे के अन्दर रख दे। कुछ ही देर में वह ताजे के समान हो जायेगी।

चपड़ा को भगाना

चीनी मिलाकर सोहागा (पीसा हुआ) अगर

जमीन में छिड़क दिया जाय तो चपड़े भाग जायेंगे।

॥ जमीन से गड़ा धन निकालना ॥

काले कौवे को लाकर उसकी जीभ निकाल कर आंत को रुई में लपेट कर बत्ती बना ले फिर बकरी का घी लाकर उस चिराग में बत्ती को जला दे। पश्चात् एक कजरौटा में काजल पारे। वह काजल आंख में लगावे। जहां धन गड़ा हो दिखाई पड़े।

बालक कवि होवे

आधा तोला बच लेकर आधा सेर गौ के दूध में मिलाकर पकावे और खीर बनाकर उसका मन्त्र यह है इसे जपे..

मन्त्र ॐ नहेश्वराय नमः।

सब्ज मोम बनाना

एक लौंग लेकर इसमें दो रतल निखालिस मोम और ५ रतल सोनेकार रस इस्टाइल मिला आग पर चढ़ा दें। अच्छा बनानहो तो कुछ सुगन्धित

द्रव्य भी डाल दें। इससे खुब बढ़िया मोमबत्ती बन जायेगी।

नरम लाहा बनाना

जुर्दन की राल, चर्बी वेवनिसी टरपेन्टाइन बराबर २ लेकर जिस रंग की लाह बनाना हो वैसा थोड़ा सा रंग डालकर मन्द २ आँच पर पकाने से साधारण लाह बन जायेगी।

सुनहली लाह बनाना

वैनिस टरपेन्टाइन २० तोले लेकर ४० तोले सोने का वर्क २८ तोले, फिरोजा पाउडर दो तोला लेकर तार्पीन तेल में मिलाया हुआ मैगनेसिया तेईस ड्राम छोड़ देने से, सुनहली लाह तैयार हो जायेगी।

* सुर्ख लाह बनाना *

वैनिस टरपेन्टाइन ३ औंस, कचोकूनो आधा औंस, मेगनेसियम तारपीन के साथ गीला किया हुआ एक ड्राम मिलावे।

लाह से कलम बनाना

कई रंगों का लाह लेकर उन्हें अलग अलग

बर्तन में पिघलावें। जब थोड़ी ठण्डी हो जाय तब सौंधको एक साथ मिलाकर और सांचे में रखें जैसा चाहे वैसा कलम बना ले।

बोतल से फुहारा उड़ाना

शीशे की एक सफेद बोतल लेकर उसमें जरा सा पानी डालकर उसके मुख को काजल से बन्द कर लें साथ ही कागज के बीच से एक कांच की नली पानी तक पहुंचा दें लेकिन यह नली बोतल की तली तक न लगे। बाद में इस नली को मुंह लगाकर बाहर से खूब जोर से फूकें तो नली के पास से मुंह हटाते ही फौरन फौव्वारा छूटने लग जायेगा।

तीसरी आंख बनाना

जुगनू और केचुए का रस एक में मिलाकर मस्तक में नेत्राकार बना लें तो तीसरी आंख के समान मालूम होगी।

॥ आसमान में सूर्य का रथ दिखाई पड़े ॥

बिनौरा का बीज लेकर उसी के तेल में तांबे के एक अच्छे बर्तन में भर देवे। फिर दुपहरिया

उस जटा को पनिहारिन के मार्ग में रख दे उसे लांघकर जायेगी, उसका घड़ा अवश्य फूटेगा।

॥ कुत्ता नाच ॥

दालचीनी को पीसकर आटे में मिला उसकी रोटी पकाकर जिस कुत्ते को खिलाओ वह नाचने लगेगा।

॥ लोहा को तांबा बनाना

नील मोथा पानी में पीसकर लोहे पर लगाने से वह तांबा जैसा मालूम पड़ता है।

पेट में नाज बोले

मंगलवार या रविवार के दिन चकई को हाड़ी में बन्द करके किसी खेत में उत्तर की ओर मुंह करके गाड़ आवे। जो कोई खेत के नाज को खावेगा उसके पेट में नाज बोलेगा।

॥ पानी में अंगूठी तरै ॥

चांदी की तीन रत्ती अंगूठी बनाकर उसमें काई निखालिस का रस डाल दो, फिर उस अंगूठी के पानी में डाले, तो वह नहीं डूबेगी।

के स्थान से वहां पलीता देकर आग लगा दो तो गाड़ी रेल की तरह लगेगी।

मनुष्य के कान गधे के समान हो जावे

गधे के कान का मैले लाकर काले तिल के तेल में मिला दो। फिर उस तेल का चिराग जला कर जो मनुष्य उसके प्रकाश में बैठेगा उसके कान गधे के कान के समान हो जायेंगे।

पानी पत्थर हो जाये

एक मिट्टी के छोटे से पात्र में पानी भर कर मिला दो वह जमकर पत्थर हो जायेगा।

मुर्गी के अण्डे नाचे

मुर्गी का अण्डा लेकर उसके सिर पर छेदकर देवे फिर एक टंग पारा देकर उसके भीतर छोड़े और छेद का मुंह बन्द करदे तो वह नाचने लगेगा

पनिहारिन का घड़ा फूटे

वट वृक्ष की जटा को शनिवार के दिन निमन्त्रण दे आवे और रविवार के दिन बड़े तड़के उठकर काट लावे अपनी देह की छाया उसमें न लगे फिर

को बत्ती लेकर धूप में धर देवे। फिर उसमें देखे तो आकाश में सूर्य सहित रथ दिखाई पड़ेगा।

॥ पानी में सुई तैरे ॥

एक गिलास पानी भर कर उसमें खा। नमक मिला दो फिर उसमें अण्डा छोड़ दो तैरने लगेगा

॥ पानी में सुई तैरे ॥

एक काँसे का बर्तन लेकर उसमें जल भर देवे फिर उसमें धीरे से सुई छोड़ दो वह तैरने लगेगी।

चिराग न बुझे

फेन समुद्र और गन्धक बराबर लेकर रूई की बत्ती में लपेट पलीता बना लेवे फिर उस पलीते को तेल के चिराग में जलावे तो कितना ही अन्धड़ चले चिराग न बुझे।

जादू की रेल चलाना

बांस की गाड़ी बनाकर उसके पहिये में थोड़ी सी बारूद भर दो। फिर जहां छेद हो (बारूद

रूपे को कलई करना

क्लोराइड आफ सिलवर ६० औंस, औंटाईं रंग आफ पेटाश सौ औंस व साफ जल ५० औंस पीतल के पात्र पर लगाने से रूपे की कलई हो जाती है।

॥ रबर स्टाम्प की स्याही बनाना ॥

साफ शराब का एक औंस गोलेनार ४० ड्राम मिलाकर रबर स्टाम्ब की स्याही बनावें।

कपड़े में आग न लगना

कपूर और स्प्रिट मिले अर्क में एक कपड़ा भिगोकर उस पर आग लगाये तो वह नहीं जलेगा।

॥ पानी से पीले रंग का पत्थर ॥

सफेद कतीरा और मिश्री में थोड़ी सी केशर मिलाकर एक प्याले में पानी डाल थोड़ी सा केशर मिलाकर एक प्याले में पानी भरकर छोड़ें। थोड़ी देर बाद वह पानी पीले पत्थर का हो जाएगा।

॥ पुराने आलुओं को नया बनाना ॥

पुराने आलुओं को पानी में भिगोकर पूर्णिमा

के चन्द्रमा की चांदनी में रात भर [illegible] के सवेरे तक एकदम नया हो जायेगा।

कागज रंगना

कागज को जर्द पानी में तर करके फिर उसे फिटकरी मिश्रित पानी में डुबो कर सुखाले उस पर अजीब उनाबी रंग चढ़ जायेगा।

बिना आग का पानी खौलाना

दो बोतल में पानी भरकर एक में नींबू का अर्क दूसरे में सोडा डालकर एक में मिला करके रख दे तो बिना आग के पानी खौलने लगेगा।

।। दीमक दूर करना ।।

जहां दीमक लग गई हो वहां हींग का जल छिड़के तो दीमक भाग जायेंगे और वहाँ फिर न लगेंगे। कगज के गोदाम रखने वालों के लिए यह एक अच्छा उपाय है।

।। अन्न न घटे ।।

आर्द्रा नक्षत्र में पलास का कन्द ले आवे और में सुखाकर भण्डार में रखे तो अन्न न घटे।

॥ तांबे से सोना बनाना ॥

विशाखा नक्षत्र में पलाश का बन्दा ले आवे कोयला करें तांबा एक रत्ती टुकड़ा करे तो सोना होय।

॥ खेत में अधिक अन्न हो ॥

मंगलवार या रविवार को दूसरे की दृष्टि न पड़े आर्द्रा नक्षत्र में काला बन्दर लेकर अपने खेत में गाड़े तो तिगुना अन्न होय।

॥ दाद की दवा ॥

अफीम कचवड़े का बीज नौसादर और चूना नीबू के रस में खरल कर लगाय तो दाद छूटे।

॥ पुत्र पैदा हो ॥

अश्विनी नक्षत्र में बेला का बन्दा ले दुग्ध में बन्धया स्त्री को पिलावे तो पुत्र उत्पन्न हो और बड़ा दानी और तेजस्वी हो।

॥ सोना उपलब्ध होना ॥

चित्रा नक्षत्र में नारंगी का बन्दा ले आवे

ताँबा गलाकर फूँके तो सोना होय।

रोग दूर होय

अश्विनी नक्षत्र में कटैया का बन्दा ले आवे गाय भैंस के गले में बांधे तो रोग निकट न आवे।

।। राँगा रूपा होय ।।

भरणी नक्षत्र में कागजी नीबू का बन्दा ले आवे और कोयला के अंगार पर फूँके रूपा होय, चूना मिलाकर धोवे।

तांबे से सोना निकले

भरणी नक्षत्र में कागजी नीबू का बन्दा लाकर कागजी नीके रसे में मिलाय फूंके तो ताँबा से सोना होय।

।। घर में लक्ष्मी वास करे ।।

मूल नक्षत्र में बहेरा का बन्दा लाकर गुग्गुल मिलाकर हवन करे तो घर में लक्ष्मी वास करे।

।। कटी मूली हरी रहे ।।

मूली या शलजम बोलेवा पत्तों की परत

हिरने से ३ अंगुली ऊपर से काट डालो, फिर चाकू से उसमें गढ्ढा सा कर दो और डोरा बांधकर लटका दो और प्रतिदिन प्रातःकाल ताजा पानी उस में डाल दिया करो, तो वह हरा रहेगा और पत्ते निकलने शुरु होंगे।

आदमी की गरदन में छूरी लगाना

छूरी इस शक्ल को बनाओ यानी दस्ता और फल एक तार से जुड़े हुये हो जब। गले में लगाना हो तार बारीक नीचे लमा रहे यानी जिसमें कब्जा और फल दोनों जुड़े रहे हो चौड़ा करके गरदन में फांस लेवे और नीचे एक आदमी रूमाल से गरदन जिस आदमी की गरदन में छूरी लगी है और चूँकि वह बेताब हो गया है इसलिये दूसरे आदमी ने उसकी गरदन सम्भाल रखी है।

॥ कपड़ा रंगने की रीति ॥

हहले साफ पानी में कपड़े को इस प्रकार

डुबाले जिससे सभी कपड़ा पर रंग एक सा आवे फिर ऐसा रंगे की धब्बा न पड़ने पावे। महीन वस्त्र पर थोड़ा रंग और थोड़ा पानी लगावें और गाढ़े वस्त्र पर अधिक न लगावे रंग पहले डोल में किसी फिटकरी या अमचूर का भीगा हुआ जल या लग्न रस पानी में मिलाकर एक साथ डाल दे ताकि रंग और खिल उठे और पक्का भी हो जावे जो रंग फीका हो उनको रंगकर कपड़े को छाया में और जो पक्के हों उनको धूप में सुखाये क्योंकि धूप में कच्चा कपड़ा फीका पड़ जाता है।

॥ कपड़े का रंग काटना ॥

पानी को किसी धातु के बर्तन में औंट कर कपड़ा डाल दे कपड़ा पानी के भीतर डूब जाये फिर थोड़ी सी फिटकरी डालकर औंटाते रहे। रंग कटकर पानी में आ जायगा। कपड़े का रंग कटके फीका औरभी रंग कट सकता है पर कच्चा ही रंग

कपड़े को रंगे फिर कुसुम के पानी में रंगा कर खटाई के पानी में रंग डाले।

बादामी रङ्ग

पाव भर जैतून के फूलों के कोर से भर पानी औटा लेवे पहले गेरु से कपड़े को रंग ले पीछे उसको आधा सेर पानी में इनको डुबा दे।

॥ कपास रंग ॥

थोड़े नील को जल में घोल कपड़ा रंग ले लेकिन रात को टेसू के फूल में भिगो रखे प्रात तनिक सा चूना डालकर निखारे तब नील में डुबोये हुये कपड़े को रंग ले। रंग बदल कर कपासी हो जायेगा।

॥ सुरमई रङ्ग ॥

वस्त्र को प्रथम तूली रंग में रंगे। तब सूख जाने पर चार पाँच बार नील रंग से रंगने से अच्छा सुरमई रंग हो जाता है।

॥ बैंगनी रंग ॥

नील के रंग से कपड़े को चार बार रंगे फिर

हल्दी में घोल दिये पानी में थोड़ी देर पड़ा रहने दो फिर फिटकरी के पानी में डुबो के सुखा लें।

* काशनी का रंग *

तीन सेर पानी में दो तोला नील डालकर कपड़े को रंगकर सुखा ले फिर कुसुम के रंग में रंग खटाई के पानी में धोले।

* पीला रंग *

पीसी हुई हल्दी में थोड़ी सी सब्जी मिलाकर कपड़े को रंग दे फिर पानी डालकर कपड़े को धो फिटकरी के पानी में डाल दे।

॥ केशरिया रंग ॥

पानी में मजीठा को औटा कर रंग निकाले अजार के छिलके और हरसिंगार की डाली के साथ में पहिले ही से डाले फिर इन दोनों रंगों के पानी को साथ मिलाकर रंग ले।

॥ नारंगी का रंग ॥

हर सिंगार के फूलों को पानी में औंटा कर

कट सकता है। पक्के रंग नहीं कट सकते बहुत से रंग ऐसे हैं जो रंग मिला रंगे जाते हैं इसलिये कपड़े का रंग निचोड़ कर सुखाले फिर दूसरे में डुबो कर निचोड़ कर सुखाले। इस प्रकार अन्त तक करे परन्तु यह न करे कि रंग में रंगा हुआ गीला हो दूसरे रंग में डुबा दे। ऐसा करने से रंग अच्छा नहीं चढ़ता।

रंगों के बनाने की क्रिया

काला रङ्ग

माजूफल एक छटाक चीनी आधी छटाक बबूल का गोंद आधी छटाक सबको अलग २ पीसकर फिर सबको मिलाकर सुखा कर रख दे जब रंगना हो तब १ छटाक चूर्ण २ पाव जल में मिलाकर रंगने से बढ़िया काला रंग बन जाता है।

॥ हरा रङ्ग ॥

प्रथम पक्के नील को पानी में डुबो दे फिर

आँवले की खटाई पीसकर जल में औटाकर कपड़े को पानी में रंगे।

जंगली रङ्ग

तूतिया बारीक पीसकर जल में औटाकर छान लेवे। एक बर्तन चूना के कलई को जल में छान कर पानी निखारले। कपड़े को चूने के पानी में रंगने से जंगली रंग हो जायेगा।

॥ आसमानी रंग ॥

निकल्चरी के रंग करने पर, आसमानी रंग होता है।

॥ हरड़ का रंग ॥

पीली हरड़ का बकल १ पाव भर पानी में भिगोदे एक दिन पीछे औटाकर जब चौथाई जल रह जावे, तब उतार कर कपड़े को रंगे।

॥ कसीस रंग ॥

कसीस बारीक पीसकर चौगुने पानी में भिगो एक दिन बाद औटाकर काम में लावे।

हर सिंगार का रङ्ग

हर सिंगार के रंग फूलों को एक दिन पानी में भिंगो देवें दूसरे दि नकलई के वर्तन में औटा ले जब चौथाई रह जाय तब उतार छानकर व्यवहार करे।

* अनार रंग *

अनार के छिलके तिगुने पानी में औटाकर चौथाई रह जाये पर ठण्डा पानी हो जाने पर व्यवहार करें।

॥ हल्दी का रंग ॥

हल्दी खूब बारीक पीसकर जल के साथ घोल कर व्यवहार करे।

अंगुली रङ्ग

टेसू के औटाये हुए पानी में कपड़ा रंगे फिर बहुत ही हल्का नीला रंगे। फिर खटाई के जल से भिंगो कर सुखाये।

॥ शर्बती रंग ॥

तीन भाग हर सिंगार के फूल का रंग एक

भाग कुसुम मिलाकर रंग जो रैना पीछे निकलता जाता है मिलाकर रंग लें।

अद्भुत रङ्ग

साफ मूंगे की जड़ सफेद जो इनको महीन पीस गुड़ मिला पानी के साथ खूब औटावे। फिर खरल करे एवं महीन मलहम लेकर एक ओर इस रंग को लेप करे। जब खूब सूख जाय पहले पक्के रंग जैसे कुसुम में डुबो दें। जब सूख जाय तब कच्चे रंग जैसे कुसुम में डुबा दें तो एक तरफ धानी दूसरी तरफ जाफरानी हो जायेगा। या पहले नीले में फिर हल्दी में डुबा दिया जाय तो एक तरफ नील दूसरी तरफ हरा दिखाई देगा।

गुलाबी रङ्ग

कुसुम में थोड़ा सा गोंद को पानी में मिला कपड़े को रंग ले।

इसमें कुसुम की गोंद को गुलाबी से चौगुना पानी में डुबाकर फिर सुखावे।

पीत पीताम्बर मूस आँधी।
लेता इति हनुमान तुही बांधी॥
ए हनुमत लंका के राहु।

॥ अन्य मूस मारने का मन्त्र॥

मूसा चूसा कुम्भक राई।
जहवाई पठओ तहवहिं जाई॥
मूसा को ऊपर चूसा पेट।
जाय के काट आम का खेत॥
मेरा घर बन करो उत्पात।
मोर घर बन छोड़ि अवसर घर जाई।
पारवती की दुहाई महादेव के दुहाई

* मूस मारने का मन्त्र *

ओंगरा के पुत्र यदि दत्त गणेश तनिक वाहन से एक देत दुहाई का टो उतरि चोड़ा पंथ स्तेरी तुला मारी फल कारा महादेव के जटा भाटे मेरा भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि...मन्त्र जपे जहां मूसा लगा हो पानी पढ़के छींटा मारे तो तुरन्त वहाँ से भाग जाएगा।

पीछे निकाला है। फिर अनार के छिलके के पानी में डुबा कर सुखा दिया जाय।

॥ माला खिरि रंग ॥

बाल छड़, नागर मोथा, कपुर कचरी पोनरी सफेद चन्दन सुगन्ध बाला मिलाकर सिंगार के फूल दो दो मासे ले सेर भर पानी में ओटा छान कपड़ा रंग हाथों हाथ झपट कर दिखावे।

॥ नौवां भाग समाप्त ॥

अथ कला कौतुक रत्न भण्डागार

॥ दसवां भाग ॥

झाड़ फूक तन्त्र मन्त्र

॥ मुस मरावे मन्त्र ॥

फकीर चहा फनगी आंधी।
इन चारों पर का बांधी॥

॥ अन्य २ ॥

हरदी का रंग अक्षत पढ़िके।
चारदा दृष्टि धर बहके॥

गुलनार का रंग

पहले कपड़े को कुसुम के फलों के दूसरे रंगमें हुबाले फिर मोंद के पानी में हल्दी पीसकर डुबा दे।

कपड़े को पानी में रंग फिर साबुन के पानी में डुबो दे इसके बाद नीबू के खटाई के पानी में डुबा दे।

॥ उन्नाबी रंग ॥

पहले हड़र के पानी में दूसरे कुसुम के पानी में तीसरे चार तोले फिटकरी के पानी में डुबोकर सुखावे।

काकरेजी का रंग

१। सेर पानी में पाव पतंम ओर महावर २ ड्राम चिरमिची माजुफल १ ड्राम को औंटाकर छान ले फिर रंगे।

किशमिश रंग

पहले कपड़े को हरड़ के पानी में दूसरे अनार तीसरी हल्दी चौथे कुसुम के उस पानी में रेती के

॥ राजा का क्रोध शान्त यन्त्र ॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	राम	दत्त	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन चन्दन केशर में अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर लिख उसे सुगन्धित धूप दीप नैवेद्य और मांससे पूजा कर यथा शक्ति कन्या तथा ब्राह्मणों को भोजन कराय दरबार में जाय तो उसे अपने मुट्ठी में इस यन्त्र को लेता जाय तो उसे देखते ही राजा का क्रोध शांत हो जायेगा।

॥ स्त्री द्रावण मन्त्र ॥

यद्यपि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक कहा जाता है। तब भी पुरुषों के संगम से स्त्रियाँ तुरन्त ही स्खलित नही होती इस लिये मर्दों और कामनियों के रहस्य हृदय में परि-

परस्पर प्रीत बढ़ाने के लिये संक्षेप में कुछ यन्त्र तन्त्रादिक का वर्णन करता हूँ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय कामा शराय।
स्यिभगद्रवाय फट्‌ फट्‌ स्वाहा॥

सम्भोग करते समय पुरुष हर तरह से अपने मन को एकाग्र कर जब तक स्त्री स्खलित न हो तब तक इस मन्त्र का उच्चारण करता रहे, जिस समय स्खलित होगी उसी समय से स्त्री पुरुष में प्रेम होगा।

॥ स्त्री स्खलित यन्त्र

गोरोचन कुमकुम कपूर की स्याही, खश के रक्त में बनावे। भोजपत्र पर चमेली की कलम से षटकोण बनाकर गोलाकार चक्र खींच दक्षिण कोण में तीन और ईशान कोण में स्त्री के नाम अक्षर कोण में दो बायीं कोण में एक ३ ह्री बीज लिख कमल दलों में लिख यन्त्र की पूर्ति करे। भक्ति भाव से नैवेद्य धूप से पूजन कर सुन्दर वस्त्र धारण करे इसी प्रकार सात दिन तक स्त्रियों को भोजन

कराय दक्षिणा दे तृप्त करे। फिर इस यंत्र को ताम्बे के ताबीज में मढ़ा दंड में बांध ले, सम्भोग के समय कामाक्षा प्रियतम, मन्त्र का उच्चारण करता रहे तो स्त्री स्खलित होगी।

*** ज्वर नाशक मंत्र तंत्र ***

सध्याऽध्यता स्वाधा गौरी रुद्रो मनसि संस्थितः।
ज्वर निहति जन्ह नाशेष सित वन्दितः॥
प्रयुक्ता सगना विद्या ललामि बटे पल्लवें।
पावकेन ज्वर घोर घोरं हसि तस्याह लोकनात्।

भावार्थ- दधुभोजन आदि मंत्र रुद्री और धारण करने में सिद्धि से वंदित शिवजी के मन का ही प्रभाव है। तथा इस विद्या में प्रयुक्त होकर बट वृक्ष के पत्ते पर यह लिखे कोयले से लिखने पर देखते ही मन्त्र से घोर ज्वर का नाश हो है।

॥ ज्वर नाशक यन्त्र ॥

इस यन्त्र को बबूल के कांटों से हल्दी की स्याही बनाकर लिखे और पूजन करे फिर पान में रखकर रोगी को देवे तो ज्वर शांत हो जायेगा।

आधी शीशी का यन्त्र

४२	४६	३	६
४	१४	४	४
७	२	४६	३८
१	८	४०	४५

इस यन्त्र को रविवार या मंगल के दिन कागज पर लिखकर सिर पर बांधे तो आधी शीशी का रोग दूर हो जाय।

तिजारी का यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

इस यन्त्र को रविवार या मंगलवार के दिन अष्टगंध से लिखकर भुजा पर बांधे तो तिजारी ज्वर छूट जाता है।

(१२०)

॥ ज्वर निवारण धूप ॥

[माहेश्वर धूप]

लोहवान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रानी, सुगंध यह सरसों केस, कूट नाम के पत्ते दोनों का वन सब्य सूखा बिनौला, जौ, बकरा के रोम गोह सिवा इन सबको लेकर बैल के मूत्र से पीसकर मिट्टी के कोरे पात्र में रख दो, यह राक्षस पिशाच आदि तथा नाग भूत, पूतना शाकिनी इत्यादि और न्यायिक चातुर्थिक ज्वर तथा अन्य विषम री रोम क्षणमात्र में दूर हो जाते हैं।

॥ तिजारी दूर होने का यन्त्र ॥

०	०	०	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०

इस यन्त्र को लिखकर तिजारी वाले रोगी दाहिने हाथ पर बांधे तो तिजारी छूट जाये।

भूत नाशक यन्त्र

इन्द्राणी का पका हुआ फल लाकर उसकी भस्म बनाय गोमूत्र के साथ सुंघावे अथवा कमल गट्टा, काली मिर्च मिलाय पीसकर नस्य बनावे तब उसको सुँघावे, तो ब्रह्म राक्षस और भूत पद शाँत हो जाते हैं।

॥ भूत नाशक गुटका ॥

कुम्हड़े के फलों को जल से हल्दी में पीस कर गुटिका बनाय अंजन करने से भूत ग्रह नाश होते हैं।

ज्वर दूर करने का यन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये । पिशाचाधिपतये आवेशाय कृष्ण पिंगल फट स्वाहा ।

इस मन्त्र को कोयले से लिख दाहिनी भुजा पर बांधे तो नित्य आने वाला ज्वर शांत होवे ।

॥ पुनः ॥

इस मन्त्र को १०८ बार जपे तो तिजारी ज्वर शांत होवे ।

साधारण बुखार दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्दि वरस्त।
ज्वरे ज्वलिलय कराय शूल पाणमेहुँ फट स्वाहा।
इस मन्त्र को १०८ वार नित्य जपे तो साधारणतः आने वाला बुखार शांत हो जावे।

॥ सात प्रकार के ज्वर शांत करने का यन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूताधिपतये हुँ फट स्वाहा।

इस मन्त्र को नित्य १०८ वार जपने से सभी प्रकार के बुखार शांत हो जाते हैं।

॥ हव्वा झारने का मन्त्र ॥

बादर ऊपर अदल बदल तेहि पर बसे गोकुल चमारे सोने की छूरी रूपे की म्यान झारी हव्वा काट सर फूल शेष सर्प दिया हिया पोर कराने की दूरी भई, ईश्वर, महादेव की दुहाई गौरी पार्वती की दोहाई फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचः।

अथ धनेली झारने का यन्त्र

राख से झारी, राख नहीं डारे बंदरे। बोहाई

हनुमान कांख बिहारी बाकी थनेलो कर्णफूल राम दोहाई रामचन्द्र की वाचा पान पथ हो जाई।

॥ अथवा घर बाट वायूगोला झारने का मन्त्र ॥

कस्बपुर होई कहां चलेवन ही चले बाण हो के कोयला की करखेह सारा पथ खण्ड कर देहु सटतर दाँत व्याधि काटे के सिर रावण का दस भुजा बीस कक्कुहाँ बरबती वायु गोला बांधू शुक्ल महादेव गौरी पार्वती के नीलकण्ठ लोना चमारिन के दोहाई।

अथ बाधा झारन मन्त्र

दर्द पराने सात अग्नि बांधो, अग्नि निश्चर बांधा सोखल बिकराल बांधो, सोलह हार बांधो न के निहार बज्र वथन दाता पिराई जो महादेव ने तर्जनी अंगुली से झारे।

॥ डंका झारने का मन्त्र ॥

ॐ सुमेर पर्वत का लोना चमारी सोते राई ने को सुनारी टूक बुक बांध जिलारी झरनी बीहर काटि समुद्र पारख हाने आओ नोना चमारी

ममर्षी तोलिये करत हड कर मारा ममर्षी कोध करूँ ।

अथ मृगी झारने का मन्त्र

ॐ हल हल वागतम् राटिका जुड़िमा आशफ फूंके मृगी थरत सुखे ॐ १।। स्वाहा ।। यहमन्त्र लिखे कण्ठ में बांधे जब मृगी आवे ।

दिनाय झारने का मन्त्र

विष के पानी कस्य भक्षा अरजा दाद दिनाय के क्षेत्र व करिये मेरी सिद्धि गुरु के पांव राखे सरण ।

अथ वैरी सुखाने कामन्त्र

श्री पुराति सुन्दरी ऊपों तोंहि तू जग मोहि त्रिपुरारी रेवासी करें वैरी रवत नहाऊँ जल थामो थल थामो २ अपनी काया, नौखण्ड पृथ्वी थामो त्रिपुरी सुन्दरी माया, जेहि करि त्रपुरा सुन्दरी शरण जो अमुक कोवेरी खहराय पढ़ वेदगो ।

नाम को दोहाई यदि नाम रहे तो महादेव को दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा...कुश से झारे

अथ नेत्र झारने का मन्त्र

पानी का छीटा पढ़ के मारे व ८ फूली मारा जाय। सन्ध्याधिप्तु कयां च [illegible] पावनश कमदिवतौं पलेखस्मास नृप नेत्र रोम मणः स्या ॥ २ ॥

॥ अथ उठी आंख झारने का मन्त्र ॥

आंख हाथ फेरे। पढ़ि के फेंके बेर सात ओ वनेर आई वानरी जहां जाई हनुमत ॐ सिख पीड़ा कंघारी गोक्षिया वनली चारिखा उक्ष्य मस्त माता गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

अथ घिरहो झारने का मन्त्र

पहर चलो मेहर चलो लंकादि विभीषण। राजा अजय पाल, सागर खानवा रवंग वाथ घाट औरत ममची पानी पीउ सात रात तोहि पीपर बात। गुणी बैरीं, डोमिन चंडालिनी तुही

क दोहाई फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच २२ या इकीस बार पढ़े।

अग्नि उतारने का मन्त्र

अग्नि भवेलमसेपस भल तिवारी पिउ दुख पावै दुहाई नरसिंह की राग दुख पावे।

॥ अथ टोना झारने का मन्त्र ॥

सोम, शनिवार भोम अगोरी कहां चली लेई अन्धारी, चार अटा वज्र केवर टोनाई बांधा साम देवार, उत्तर बांधा कोयला दानव दक्षिण दानव दक्षिण बांधो क्षत्रपाल चार विशेष चलु भैर दंखि खिल भैरवगन चल गावै चल छत्तिस कोटि देवता चलु उत्तर पंथ योगिनी चलु पातक पाल असुका चल रामचन्द्र क पाईक अंजनी वीर चलु ईश्वर महादेव गोरी पार्वती की दोहाई टोना न रहे कले करावे।

॥ अथ ज्वरित लोहा गहनित देशा ॥

जस्ती उज्जैनपुर नगरी, पटना का राजा अजय पाल की दुहाई यदि दूनों ही बुखार हो नहे। अजो

अथ वन्चू खालसा मन्त्र

ॐ चक्रेशवरीं बारनी शंख गावा प्रहारिणी अमुकस्य बन्धी स्वारथ मोक्ष कुरु २ स्वाहा फट २१ बार दिन में जपे ॥ ३ ॥

॥ अथ खोरहा झारने का मन्त्र ॥

अर्जुन फलानि जिस्म ऊँत बजी कपिध्वज गिरि उवित मुख पार्थैवः सव्यवाचा धनंजय, इति अर्जुन दशनाभानि पशु पीड़ा हरणितः ।

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	६	२
७	४	५	४

अथ कीरा झारने की रीति

यह यन्त्र लिख पशु को बाँधे तो खरिहा छूटे।

अथ बमने कलम मिताइ, बोकरो पाये किराह जाई। सूर्यदेवता साखी जो किरहा रहे मांखी ।

भूत उतारने की रीति

भूत के प्रकोप से जिस मनुष्य की मृत्यु होने वाली हो वह दिगम्बर दीनानाथ योगेन्द्र. योग वल्लभ गंगा। सोकार सशक्ति जिस मन्डखल मणि तम। इस मन्त्र के वास्ते ११२ बार जप कर सिद्धि करे। इसके झाड़ देने से भूत का कोप उतर जावेगा।

मन्त्र...सर मुण्ड तथा समक कमल कगद नमक तथा बिछणी रक्त घसरा क्षोर दृष्टि स्वरूपिणी इस मन्त्र को १०८ बार जपकर सिद्ध करले प्रेत प्रकोप उतारते समय इस मन्त्र को पढ़कर बायें हाथ जल लेकर दाहिने हाथ से मार्जन करे।

योगिनी प्रकोप निवारण

मन्त्र...अट्टहास नृता सर्वदाय दिगम्बराय स्वासान स्थिता देव मुण्डमाला विभूति प्रवाहित किये हुए योगिनी को सात बार इस मन्त्र को

आंकने से योगिनी प्रकोप दूर होगा ।

प्रेत वशीकरण

पूरब की ओर किसी घर की भीत पर प्रेतकी आकृति बना प्रतिदिन रात के दो बजे भक्ति भाव से उनकी सेवा करे अथवा शराब में सफेद सरसों के बीज उबाल पीस कर आकृति पर तिलक लगावे । मदिरा और मांस का बलिदान आकृति के सामने रख शूद्रों को बांट दे तो प्रेत वश में होगा ।

॥ भूत प्रेत नाशक यन्त्र

३	७६	८०	५
८४	७	१	८४
८३	२	८१	८१
६	७९	८५	४

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिख कर बालक के गले में बांधे तो प्रेत का भय न हो

बुरे स्वप्न न देखने का यन्त्र

दं	जं	घं	चं
दं	मं	पं	नं
जं	धं	षं	दं
कं	सं	ह्रीं	सः

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर सोते समय सिरहाने रख दे तो बुरे स्वप्न कदापि नही दिखाई पड़ेंगे।

दुःख स्वप्न दूर करने का मन्त्र

ॐ वारणास्या दक्षिण कोणे कुक्टं नाल ब्राह्मण। तस्य स्मरण मात्रेण दुस्वप्नो सुषम्ना भवेत्।

प्रातः काल उठकर इस मन्त्र को जपकर हाथ के ऊपर फूँक मार फिर वही हाथ फेर देवे यदि खराब स्वप्न देवे तो उसका भी फल अच्छा होगा।

भूत झारने का मन्त्र.

ॐ शाकिनी भूतनी रवितनी छोड़ो उड बोवसौ कटाऊं भूत कटाऊं प्रेत कटाऊं छुड़ी कटाऊं गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

माला लेकर इस मन्त्र को २०८ बार मन्त्र जपे। धूप और फूल से सज्जित हो पूरब की तरफ मुँह करके कुशासन पर बैठ उक्त मन्त्र को जपे: जर लगी हो तो सरसों मि्ी और नमक मिलाकर झाड़ो और ओं आया कह सरसों आदि फेंके तो नजर छूट जायेगी।

नजर दूर करने का यन्त्र

६३	४७	२	८
८	३	६९	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

इस यन्त्र को पाव पत्र लिखकर बालक

के गले में बांधे तो नजर छूट जाती है ।

॥ शीत ज्वर में क्वाथ ॥

पीपल, चिरायता, अरुसा शिलोत मोथा पित पापड़ा, पद्माक्ष पोहकर मूल नारंगी और सौंठ इतनी औषधियों में साथ जल में उबाल करके इस काढ़ा को पीवे शीत ज्वर दूर हो जाता है ।

॥ शीत ज्वर निवारण ॥

१	६	६१	६६
८	२	६	८६
६२	६५	३	७
६४	६१	६	४

इस यन्त्र को लिखकर जिसको शीत ज्वर आता हो उसके गले में बांधे तो छूट जायगा ।

॥ अर्श बवासीर बिभिलिका चूर्ण ॥

बहेड़ा अरल, चित्रक सेंधा नोन, साग कुम्हड़े की छाल अजवाइन का चूर्ण मट्ठे के साथ पीने से बवासीर करने वाले पदार्थ खाने पर मस्से नहीं

होते ऐसे ही तर्क के साथ लिले खाने से भी अर्श नष्ट हो जाता है।

|| बवासीर लेप ||

पाठ ज्यादा दीपक यह सब अलग २ मिलाकर लेप करे तो अर्श रहे। करेल तैयारी गुड़ के साथ लेप करे और हरदी, कड़ुआ तेल कड़वी तोरई इनका घी बवासीर पर लेप करने से बवासीर दूर हो।

|| जीर्ण रोग पर इत्यादि चुर्ण ||

हर्र पीपल, काला नोन इसका चूर्ण गरम कर जल के साथ अथवा छाछ के साथ लेने से सभी अजीर्ण को नाश करता है यह अमृत के समान है।

|| कलमा रोग की दवा ||

नीम, गिलोय, कटारी हर्र, बहेड़ा, आंवले इनका स्वरस मधु के साथ खाने से यह काला रोग को शीघ्र नाश करना।

|| खांसी की दवा ||

परदा सनायपत्ती, वायविडंग, गन्धक सुहागा

भ.म मिलाकर हरें बहेरा आंवला सोंठ का चूर्ण का क्षरा के साथ अमृतार्श नमक रख के मिर्च से सवेरे खावे तो खांसी रोग नष्ट होता है।

॥ खाँसी की दूसरी दवा ॥

माथा, शाकर मूल हरें सोंठ कपूर पीपल इन सबको मूल के साथ अच्छे बना मोदल पान करने में खांसा दूर होती है।

॥ हिचकी की दवा ॥

सताल्लू पीपल देवदारु इनका काढ़ा हींग सहित ठण्डा करके पीवे और ऐसे ही उसके चूर्ण से धुआं पान करें तो पाँचो तरह की हिचकी का नाश हो।

॥ वमन न होने का इलाज ॥

गिलोय का काढ़ा शहद के साथ पीने से सम्पूर्ण तरह के वमन दूर करे। वेल की छाल थोड़ी सी सहद के साथ खाये तो सम्पूर्ण उल्टियों को हरे पीपल की छाल को जलाकर जल में बुझाकर पिये तो भी बन्द हो जाता है।

* समाप्त *